GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0446**

Classification:

Original File No. 18

Title

Rajgangpur Ilaka

Volume:

Running **from year: 1928** **till year: 1930**

Content:

- Letter from A.Diller to the Church Council on 31 Mar.1930.
- Letter to Miss Diller by P.Hurad on 19 Feb 1930 & 24 Sept 1929.
- Extract from the Proceedings of the Council , Dt. 6 July 1929.
- Report of Runga Parish, Dt. 1 April 1929.
- Letter to the Secretary by Dharam Prakash here on 21 Feb. 1929.
- Memorandum No.496/29 or 495/29 – P.Hurad Dt. 1 Feb. 1929.
- Letter from P. Hurad to Rev. Johan Bhengra on 5 Jan. 1929.
- Lutheran Schools in Gangpur State.

ROYAL OFFICE FILE

Rajgangpur Ilaka

1928-30

ELEPHANT BRAND

MEANS

BEST

Copy Tissue Paper.

<u>Urgent!</u> Through the Secretary of G. E. L. Church, Ranchi

Ranchi, 31. III. 1930.

From

Miss A. Diller, Raj Gangpur.

To

the Church Counsil of the G. E. L. Church, Ranchi.

May I put following matter before the C. C.'s kind consideration and action:

This month it got 2 years that Mr. Diller died and the congregations of Gangpur State are wanting a new Missionary who is highly need. Therefor I request the C. C. strongly to consider about yust after the Mahasabha that I will be able to speak something about that matter before the C. C.

Hoping that my petition will be heard

I remain Yours in Him

A. Diller.

The Council of the Gossner Ev. Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845. — Autonomous 1919. Secretary: P. Hurad.]

LUTHERAN COMPOUND.
RANCHI, (Behar.)

No. 1403/30.
F. - 18.

Dated the 19th February 1930.

Dear Miss Diller,

I am really very sorry for not being able to write you any letter which I should have done long ago. I am afraid you will consider me remiss but any way I had to do a lot of work and before and after the Church Council meeting I had to be out of Station on very urgent deputations.

I had promised to send you the address of medicine for mother but as some lists were missing I had to search them out. I am sending in a separate cover a few Price - lists of Indian medicines which please order and try. If God so wishes She will be cured. I apologise for this delay too.

The consecration of the Chapel at Birmitrapur takes place on the 26 th I am sorry I will not be able to come as I am wanted elsewhere. I trust you will be there and you all have a very good time. Rev. A. John and the President will represent the Church Council. Miss Sokey will send you your Photographs they are ready.

With hearty Yishusahays to one and all from Mrs. Hurad and myself.

Yours sincerely,

P. Hurad

THE GANGPUR MOTOR TRANSPORT SERVICE.

TELEGRAPHIC ADDRESS
"DUBASH, RAJGANGPUR"

AMGHAT,
RAJGANGPUR, B. N. RY.

Dated 22nd January 1930

Ref. No. GMTS/ 125-7

Madam,

We have received your letter of date and beg to state that Mr. Dubash is not present here.

The running of the car to-morrow is impracticable as our Talbot car is under repair and we have no spare lorry also.

Mr.Dubash is expected here this evening when we shall hand him over your letter.

Yours faithfully,
For G. M. T. Service,

Miss. A Diller,
Rajgangpur.

EXTRACT FROM THE PROCEEDINGS OF THE COUNCIL

OF THE G.E.L. CHURCH CHOTANAGPUR & ASSAM

Dated 6th July 1929.

18. MA: PADRI NATHANIEL TIRKEY - Rajgangpur ke Ma: Padri Nathaniel Tirkey ko Bamra men kam karne ka adhikar diya gaya tha parantu wah udhar kuchh bahut jake bahut bimar pare taubhi we jahan tak sake udhar ka kam dekhen. Council unko biti May mahine se Rs 10/- karke dewe jisten unka pratipalan ho sake.

Sd. P. Hurad.

Secretary.

Memo No. 1304/30.
F.- 18.

Dated Ranchi, the 14th January, 1930.

Copy of the Church Council's Resolution forwarded to the Rev. Nathaniel Tirkey C/O. Miss A. Diller, G.E.L. Church Compound, Rajgangpur, for information.

[signature]

Secretary, Lutheran Church.

Church Council
Received 20.8.29.
Register No 403...
Date 16.8.29.
File 18...
Reply No..........
Date

Rajgangpur
15-7-29.

महामान्यवर महाशय लूथेरान चर्च कौंसिल छोटानागपुर और आसाम को मुझ दुर्भाग्य अधम दासका बहुत योग्य सलाम।

आगे में आपना सविनय आप के आगे अपना कुहाल पेश करता हूं और आशा करता हूं कि आप कृपापा इसपर ध्यान करेंगे।

मैं ने आप को आज्ञानुसार बमड़ा स्टेट में सेवकाई काम का शुरू किया था। पिछली बेर अर्थात मई महीने के आरम्भ में जब मैं देवगढ़ गया तब वहां पहुंचने के दूसरे ही दिनसे मुझ को पतला झाड़ा शुरू हुआ। कहो नहो दवा करनेसे 8 दिनों में झाड़ा बन्द हुआ तब वहां का काम करके रेंघापारा, करडेगा और गुनाइने होते हुए मसिनो कानो में का सेवकाई का काम करके घर लौट गया। आठ दिनों के बाद फिर पतला झाड़ा शुरू हुआ और ग्यारह दिनों तक दिन और रात झाड़ा गया। पीछे एक महीना दिनों तक झाड़ा के पहिले या बाद लोहू बहा - क्योंकि बवासीर बिमारी बहुत तेज हो गई थी - इस्से मैं बहुत दुब्बल और पतला हो गया था। आज तक मैं कमजोरी दशा में रहता हूं - बहुत चलने वा काम करने का बल अब तक मुझमें नहीं है। देरी तक

पांव झुलाकर ऊपर बैठने या अधिक समयलों खड़े होने और ठंढा में रहने से पांव और पेट फूल जाता है।

सो ऐसी दुर्भाग्य हालतमें महाशयसे साबिनय मेरी अर्जी और बिन्ती येही है कि मुझ लाचार पर अनुग्रह दृष्टि करके मेरा उपकार कीजिये। मैं तो अब पहले के समान नियम और आवश्यकतानुसार सेवाकाई का काम पूरा नहीं कर सकता हूं इस लिये आपसे मेरी दीनता पूर्व्वक प्रार्थना यह है कि आप दया कर मेरे जीने का उपाय (पेन्शन) बन्दोबस्त कर निकटवर्ती मंडलियों में सेवाकाई करने का अनुमति प्रदान करेंगे।

इस अनुग्रह के लिये मैं अपने जीवन भर सारे मन से आप का धन्यवादी बना रहूंगा॥

आगे शुभ

आप का अधम आज्ञाकारी दास

Nathanael Sirkey

924/29.
F. - 18.

24th September 29.

To,

Miss. A. Diller

G.E.L. Compound

Rajgangpur.

Dear Miss Diller,

Your two letters received for which thanks. The matters referred to in the letter will receive due attention of the Council and you will be informed of them in due course of time.

With kindest regards,

Yours sincerely,

Secretary

G.E.L. Church Council

Ranchi.

Church Council
Received 22.7.29
Register No. 852
Date 19.7.29
File 18
Reply No. ....
Date ....

Through the Secretary

To

The G.E.L. Church Council
Ranchi

मान्यवर महाशय चर्च कौन्सिल को मेरा यीशुसहाय।

मैंने १४ वीं जुलाई को राजगांगपुर से रवाने हुआ हूं और इसी लिये मैं पण्डु आना हुआ पहुंचा हूं। लेकिन अभागा बात रास्ते ही में बिमार पड़ गया हूं। बुखार के कारण बड़ी मुश्किलताओं से पहुंचे हैं, आपकी और सामान जिन्से को ठीक होगया। अभी तक हम को बुखार नहीं छूटा है।

इस लिये दीनता पूर्वक अर्ज़ी है, कि मुझे एक हफ्ता का छुट्टी दीजे। क्योंकि हम तो बुखार से पीड़ित हूं। दूसरी बात मेरा बक्स है जिसमें [illegible] बहुत ही अधिक नुकसान होता है। इस लिये आप लोगों का बहुत धन्यमानूंगा।

आप लोगों का आज्ञाकारी
Johan Bhengra

Pandu
19-7-29

Church Council
Received 1. 6. 29.
Register No. 81 ...
Date 20. 6. 29.
File 18.
Repl ...
Date ...

Raj Gangpur, 20. VI. 29.

My dear President!

Rev. Nathanael Tirkey has taken up the work as a padi in Bamra State, as you know. He has sent report about to the Secret. of C. C. Mr. Kurad, so he told me. What is now about his salary? How many he will get and when? - Up to-day he could work very little, because when we went to Ranchi for holidays he got sick to death and is still not able to work. I myself fear that the work in Bamra is too heavy for him and must be done by a younger person. But what we will do with Nat. Babu? He sits now, I may say, without job, because by our private bank which is in a bade condition, he gets for writing work only 5.- Rup from the beginning of June, because there is very little to write. It is rather difficulty and I would be very thankful if you would show us any road! Sorry to say, he is an ill

man and therefor unable to do good work.
We can try again how he will be after the next travelling to Bamra. Only we must know if the C. C. gives him salary or not and how much.

Kindly give me any reply in this matter.

With kind regards and Yishu sahay

Yours

A. Diller
E. L. Mission

ता: १०-६-१९-२९ ई०

महाशय, बाबु ओबेद तिड़ु चर्च कौंसिल को मेरा योशुसहाय होवे
को लगे बातहै सो मेरा नराज और उदास को महाशय, सरकार के पास
बतावहु को नथानिएल बाबु लोमबोई का और आनन्दमसीह प्रचारक
कोयेडेगा का ये दोनो लोग गरीबि लोगो को बहुतर जारीबना करते है
देखो सुनो को = खिस्तसहाय तोपनो से ५०) रुपौया और ११) रुपौया सवतनो और
और ३१) रुपौया कर्ज = और २ खसी = १०) रुपौया का चवाल दाल इत्यादी और
नथानिएल-तोपनो से ५) रुपौया और १) खसी और ३० पैला चावल दाल इत्यादी और
दानिएल-तोपनो से ५) रुपौया + और मनसिद-होरो से २) खसी और ११) रुपौय
हनुख-होरो से ५) रुपौया और १ खसी + और नथानिएल-समद से १ खसी
और २० पैल चावल दाल इत्यादी + सुलेमान-हेब्रोरोम से १ खसी ११) रुपौया
और मिका-बागे से १ खसी और ११) रुपौया + और दुलारी-बरला से
१ खसी ११) रुपौया + ईलियाजार-बाबसे १ खसी १५ पैला चावल दाल इत्यादी
मगलदास-बरला से ६० रुपौया और हाबिल-सुरीन से १ खसी १ पैला
चावल दाल इत्यादी + बिना दोस का सुरु जारीबना किया

ता: १६=१०मा: = १९२८ ई० मे रोयामुन्डा का मई
महीन मन के जबरजसती जारीबना किया है सो बिना दोस कसु
रु मे १२ आदीम से १२ आदीम किया कु दोस कासुरु[illegible]
१२ आदीम तो नहो पर दो आदीम + पपिअरो और मारीयाम तोपो
नो केया दोस किया आसम मगालरह सो रांची से नथानिएल
बागे गुराई है आनन्दमसीह बागे जारीबना करता है गरीबि का सो
गरीबिवो का सब रुपौया को गुरा देना खसी चावल दाल नोन:
तामुकु सब ३। हीसब कारके गुर देना लोमबोई का १ नथानिएल बागे
कोएडेगा का आनन्दमसीह बागे दोनो ग बागे बागेर (दो) सौ)
५०) रुपौया के को दोनोगें पाद्रि पासचर पोरादेन चाहीये
नथानिएल बाबु और आनन्दमसीह प्रचारक रोयामुन्डा का रुपौया को
रोयामुन्डा मे सब बाबु लोगो जुमकार के रोयामुन्डा खजान टाहरन चहीये
रोयामुन्डा का गरीबोगें का रुपौया को गरीबो को देना चाहीये
लोमबोई का नथानिएल पद्र कोएडेगा आनन्दमसी दोनो जुमकार
के पिअरो और मारीयम दोस किया है १२ मई महीन सब
नहो गुनु दोस किया है २२ सौ) ५० रुपौया २ आदीम गुरन
नथानिएल बागे + आनन्दमसीह बागे जदी नहो बिचर होगा
गरीबि लो को सतन टीका है कोनहो सो हम को चोट्टा देवो
बाबु ओबेद तिड़ु जीला तिजेपुर थाना केन्द्रीगोडी
सौनाबिल मगन टनबार लनो चोट्टा मजा होयो आरखसे
[illegible] कबिरहाम तोपनो आस [illegible]

ગારો બિ સે લોયા હૈ ઓ નયાનિયેલબાબુ
ઓર ઓન્દ્મસાહ્બો સ્બને ~~[illegible]~~ મત દેવો
ગારો બિ ગારોબિ ઓ રખૌયહૈ
બિ બાબુ ઓબેય મય ઓરાજો ઓાર હૈ
ગારો બાબો પૂછુ યના સેબો નહો હૈ
ગારોબિ ઓ સલત ટોઓ નહો હૈ
ઓયેંડગા ઓ ઓન્દ્મસોબાગો
લોમ્બોઈ નયાનિસનબાગો બેયા પાઈ હૈ
મદોમ બિ ૨૦ રુઓયા લેનવાલ હૈ
પાદ્રયોબામ ઓસહો હૈ
લાં ઓબિરદાહી લલબાગના

'નયાનિસલબાગો લોમ્બોઈ
ઓન્દ્મસાહ્બાગો ઓસેંડગાઓ ઉપરમ
દસ્સસચોટ્ટો હૈ
બાબુ ઓબેદ લિહુ

ટોપોમ અરદાસ ઓબ
ઓસ્બાટા

ફેરફાર
ફેરફાર બાદ

Church Council
Received. 26.6.29
Register No. 8.29.
Date. 10.6. 29.
File 18
Reply No............
Date..................

Recei.. from
President
18/6/29

Miss. L. Diller wants to know about the salary of pastor Nathanael of Rajgangpur. I could not find out her letter. Please put it in agenda.

Church Council
Received..26.6..24.
Register No.804.
Date...............
File 18.
Reply No...........
Date...............

J. Tiparus

No. 678/29.
F. - 18.

28th May, 1929.xx

Pracharak Dharamdas Kerketta,

Ap Bamra state ke Pracharak bhaiyon ko mera bahut 2 Yishusahay. Ap logon ka darkhast mila aur sab hal bhi malum hua. Ap logon ko janaya jata hai ki barek Station ko grant diya ja raha hai aur waisa hi ap logon ke liye Rajgangpur men grant diya jata hai so usi grant se ap logon ko bhi milega. Ap log Rajgangpur ka padri se iske bishay men adhik bat janne sakenge.

Asha karte hain ki Ishwar pita ap logon ke sath hoke ap logon ki adhik sahayta karega, jisten uska rajya ap logon ke bich men adhikai se phaile.

Khrist ke Prem men

ap logon ka,

[signature]

Secretary,

G.E.L.Church Council

RANCHI.

Church Council
Received 6.5.29.
Register No. 723
Date 3.4.29
File 18
Reply No.........
Date.........

गौस्सनर एवंजैलिकल लुथेरान चर्च कौंसिल के मान्यवर महाशयों को हम बमड़ा के दीनहीन दासों का यीशुसहाय.

आप लोगों को हम दीनहीन दासों का लाखों धन्यबाद. उस दया के कारण होवे जिसको कि आप लोगों ने हमलोगों की पहिली दरखस्त पर हमों पर दिखलाई थी। उदारता सहित हम लोगों को फिर भी कहना पड़ता है कि बमड़ा में के भाइयों की गरीबता के कारण से महिने में ।।।) आना था १) रुपैया और इससे अधिक १।) रुपैया तक सिनोंद और चाट सिनोंद होता है जिस कारण हमों को अपनी जीविका चलाने को बहुत ही मुस्किल जान पड़ता है भाई लोग इतने गरीब हैं कि उनको अपनी जीविका चलाना ही बहुत मुस्किल है पर तौभी वे अपनी शक्ति भर यतन तो करते हैं पर उनसे थोड़ा ही होता है हम उनसे चाट सिनोंद जबरान नहीं ले सकते हैं क्योंकि उनको जब अपना ही पेट नहीं भरता तो वे कहां तक जोर दे सकते हैं ।- हम लोगों का प्रत्येक प्रचारक-पन में कौंसिल की ओर से ४) रुपैया मिलता है और हरएक प्रचारक पन में महिने में ।।।) आने से १।) रुपैया तक होता है जिस को मिला कर जमा ५।) रुपैया या इससे अधिक ५।।) रुपैया तक होता है ५।।) रुपैया से हम अपने कुटुम्बों को पाल नहीं सकते हैं क्योंकि हमारे न खेत है न दरवाजा है कि जिससे हमें कुछ भी सहायता मिलती ।—

सो हम दीन दासों की सविनय अर्जी है कि कृपाया हम लोगों की दशा एकबार कौंसिल अपनी निज आंखों से देख कर जावें और जो आप लोगों को उचित जान पड़ते पड़े सो हमों की भलाई के लिये करें हम आप लोगों का बहुत ही और सदा धन्यबादी रहेंगे. यदि आप लोग हमारी जीविका और प्रतिदिन की आवश्यकता के लिये उचित प्रबन्ध कर देते ।- आप लोग हमारी मंडली के सिर और मां बाप हैं इसलिये आप लोगों पर हमलोग अपना सम्पूर्ण आसरा डाल देते हैं और उम्मेदवार हैं कि आप लोग कृपाया हमारा निवेदन ग्रहण कर हमारा उपकार करेंगे ।—

आप लोगों के दीन आज्ञाकारी दास गण.

घासीदास देवेश्वर प्रचारक बमड़ा [illegible]
प्रभुसहाय डांगवार रेंघापरा
सुनास प्रचारक [illegible]
रोबिन प्रचारक बमड़ा [illegible]

Forwarded to the Council for his favourable opinion
Johan Bhengra
3.4.29

EXTRACT FROM THE PROCEEDINGS OF THE COUNCIL

OF THE G.E.L. CHURCH, CHOTA NAGPUR & ASSAM
DATED 15th APRIL 1929.

11. PREMCHAND KULU KI SADI. Koronjo aur Ghoghor kĕ padriyon ne mil kar darkhast diya hai ki Premchand ki stri 10,12 bars huwe Assam gai aur wahan dusre purush ke sang uske balbachche hain so Premchand ko sadi dene ki anumati mile.

SANKAL: Ki Premchand Kulu ko niyamit biwah diya jay aur sath men uski registery bhi kanun anusar kii jay.

Sd. P. Hurad.
Secretary.

Memo No. 602 & 603/29.
F.-18

Dated Ranchi, the 25th April 1929.

Copy of the Council's Resolution forwarded to Rev. Prabhusay Horo, Ghoghor, for information and compliance.

P. Hurad 25/4/29
Secretary.

Church Council
Received 8.4.39
Register No. 668
Date 1.4.39
File 18.
Reply No.
Date

Runga Parish का संक्षेप रिपोर्ट

(१ अप्रैल १९३९)

श्रीयुत महामान्यवर प्रेसिडेन्ट पादरी योहन टोपनो को मेरा यीशुसहाय

मैं आपके पास एक संक्षेप रिपोर्ट मेरे इलाका से भेजता हूं और चर्च कौंसिल में इसका विचार करने को सौंपता हूं।

रुनगा गांगपुर स्टेट के प्राय: बीच जगह में है। १९३२ साल के दिसम्बर महिना से रुनगा मंडली में एक नया पादरीपन सुरु हुआ है इस पादरीपन में पहिले से १२ प्रचारकपन है और बीते साल से ३ प्रचारकपन जो पहिले मरसुगदा में सामिल था सो मिलाया गया है और उसी के भीतर कई जगह आजकल मिला है जिनमें बिरु इलाका से पुराने खिस्तान लोग जाके नया जगह खेत आदि बनाकर बास किये हैं और ये अभी तक बिन रखवाले की नाईं हैं और उनके लिये विशेष चिंता न करने से वे रोमी तरफ मिल जायेंगे। रुनगा से दिन भर का दूर रस्ता है और जंगल में इधर उधर भिन्न २ जगहों में हैं और मैं बराबर उनको नहीं देख सकता हूं और हर समय उनको लौकिक सहाय नहीं दे सकता हूं क्योंकि मेरा इलाका भी फूला है सो ऐसे जगहों में नया प्रचारक बैठाना ही पड़ेगा तब ठीक चिन्ता होगी। ऐसा करने से उनका हाल चाल बराबर रिपोर्ट द्वारा मुझको मिल सकेगा और समय २ आत्मिक बातों का मैं चिन्ता कर सकूंगा। बीते साल में सभा में भी इस बात को बोला था कि कौंसिल उनके लिये रुपैया पैसा की बात में चिन्ता करे पर अब तक कुछ विचार नहीं हुआ। इसलिये मैं फिर रिपोर्ट द्वारा सुनाता हूं कि इसके लिये कौंसिल उपाय करे

१, बारोगढ़ एक मंडली नया ~~अभ्य~~ खोजक २६ घर हैं मुंडालोग हैं। इसमें अब तक बिना तलबवाले प्रचारक गिर्जा चलाते आये थे वे तलब न पाने से छोड़ दिये और अब बिल्कुल खाली है वहां तलबवाला प्रचारक न होने से वे रोमी तरफ उलट हो जायेंगे। वे बिल्कुल गरीब हैं वहां मंडली आमदनी नहीं है।

२, गिदपहाड़ी एक मंडली जिसमें पुराने खिस्तान बिकेल इलाके से आकर बास किये हैं ११ घर उरांव भाई लोग हैं। यहां भी कोई प्रचारक नहीं है और इनमें ५ घर रोमन फादर के पास अपना नाम भी लिखा चुके थे और खेत के गोलमाल में फादर से सहाय पाने चाहते थे। मिसं डिक्लर के साथ जाके समझाने पर रह गये हैं।

३, कुसुमुरा — यहां ३ घर पुराने खिस्तान मुंडा भाई लोग हैं इनमें से अब तक रोमी तरफ अनाम नहीं किये हैं पर संसार के समान रहते हैं। यहां भी एक प्रचारक होने से मंडली बढ़ने का उमेद है।

४, तिलाईमाल यहां ४ घर पुराने खिस्तान खड़िया भाई लोग हैं

५, खुखीडीह ७ घर खिस्तान खड़िया भाई हैं

६, गांगपुर गढ़ यहां नया होने चाहते हैं

ये जगह सुन्दरगढ़ से ५ कोश वा ४ कोश दूर पर भिन्न २ दिशाओं में हैं और जो मरसुगदा इलाके के सामिल था वह निमडीह एक मंडली है यहां मास्टर आप चलाते हैं और तलसेरा दूसरा मंडली है यहां एक प्रचारक है और कोरोवाबहाल तीसरा मंडली है यहां एक प्रचारक है इन मंडलियों में उरांव भाई लोग हैं जो तलब

Church Council
Received...
Register No....
Date...
File 15.
Reply...
Date...

वाले प्रचारक के काम तलबदार पाने से वे बेचारे दशा में पड़ रहे हैं
इन जगहों में सफर करने में मेरा यही दरकार अति आवश्यक है कि
प्रभुभोज बांटने में दरबरस का चिंता करना — मेरे इलाकों हर मंडली
दरबार लेते पर इनलोग नहीं लेने चाहते हैं और प्रभुभोज न बांटने से
तुरंत दरखास देने जाते हैं पर उसका खर्च का कुछ चिंता नहीं है फिर
सफर के लिये गाड़ी खर्च दरकार है — यहां बहुत दूर है एक गाड़ीका
४, ५ दिन अपना काम छोड़के बिना पैसा नहीं जाते — फिर मेरे इलाकों
इतनी आमदनी नहीं है कि मेरा तलब होवे और आनेवाले दरबारस
का चिंता और गाड़ी खर्च दे सकूं — मेरा आमदनी मोटा हिसाब से महिना
२५) रुपैया है तो मैं कहां तक उपाय कर सकूंगा और कहां तक नया
प्रचारक ठहरा सकूंगा — सो यह मेरे विचार में बड़ाही कठिन बूझ पड़ता
है और कौंसिल मालिक है इसमें मेरे सहाय करें। इसमें जल्दी हो
उपाय करिये और मुझको हाल मिले जिससे मैं खातिर पाऊं।

आगे आप लोगों का आश्रम दास
पादरी योहन तोपनो हनगा

[...] Council
Received 5.4.29
Register No. 651
Date 8.2.29
File 4
Reply No.
Date

ईसा हिन्द श्री 6 श्रीयुक्त मता मन्यावार चर्च कौंसिल के प्रेसिडेन्ट और मेम्बरानों (सदस्यगणों) को हम कुमारकेला पारिश पंचों का सविनय दीनता पूर्वक अर्ज यही है कि हम उरांव भाइयों का परमभाग है कि सब जातियों में जाति उन्नति का विचार हो रही है सो हम लोग भी यही चाहते हैं कि गांगपुर इलाके में उरांव जाति के भाइयों की उन्नति होवे। और इसलिये उनके बीच में काम करने के लिये एक उरांव पादरी अवश्य होना ही चाहिये क्योंकि ऐसे नेतागण न होने के कारण जाति उन्नति घटते जा रही है सब जातियों को स्वाभाव है कि अपनी२ जातियों में अपनी२ भाषा से बात विचार करने से उनको उमंग बढ़ती है। हमारे गांगपुर इलाके में बहुत से संसारिक उरांव भाई और बहिने हैं और जिनकी उन्नति करना ~~हम्म~~ हमों का परम कर्तव्य काम है। और ऐसे नेता अर्थात उरांव जाति रिती अनुसार बदानुबाद कर उनकी उन्नति की सीमा में लाने को ज्ञानवानों की कमी से उत्तरोत्तर सोचनीय दशा हो रही है। गांगपुर में उरांव लोगों की भाषा की उन्नति भी करना चाहिये क्योंकि बहुत उरांव लोग हैं जो नाम मात्र उरांव हैं और उरांव भाषा से अनजान हैं इसलिये दीनता पूर्वक अर्जी करते हैं कि गांगपुर इलाके में एक न एक उरांव पादरी अवश्य होना ही चाहिये चाहे तो दोनों भाषा जानने का ज्ञान रखनेवाली पादरी होवे।

इति कृपा कर भूल चूक माफ करेंगे। —

कुमारकेला
ता: 8.2.29

आपके शुभ
आप लोगों का नम्र शिष्यगण

Signature.	Village
1 Nathaniel Tirky —	— Kumarkelai
2 [illegible]	[illegible]
3 Immanuel Lakra —	— Bhagattoly
4 Shimon Toppo —	— Baukhaman —
5 [illegible] लकड़ा —	[illegible]
6 [illegible]	[illegible] —
7 मसीहदास लकड़ा —	— [illegible]
8 Amos Tirki —	— Kumalkala
9 इलदास टोप्पो —	— [illegible]
10 मसिहदास " —	— [illegible]
11 पौलुस कुजुर —	— नवां गाव
12 हानुक ~~[illegible]~~ खाखा —	— चुंगीमैट
13 [illegible] बरला —	— खिजुरडीह
18 Bilokan Ekka —	— Thopaberna —
15 पौलुश बेक —	— खरीओर
16 दनीएल लाकड़ा —	— [illegible]
17 सजुव कुजुर —	— " "
18 निर्मल बेक —	— रुंगरबहार
19 Samuel Tirkye —	— Rungarbahar
20 किशान बरला —	— डुडुकाबहार
21 मरकास लकड़ा —	— " "
22 प्रभुदयाल बाघवार —	— जतराटोली
23 रवीसत पेटार लकड़ा —	— " "
24 - लोनस खाखा —	— [illegible] —
25 - मरकास बरवला —	— " "

File.

G. E. L. Church.

Raigangpur

26. 8. 29.

माननीय महाशय वाइस कौंसिल सेक्रेटरी साहब को मेरा योशुसहाय।

मैं ने चम्पियाबाबू का भेजा हुआ चिट्ठी जिस को आप ने मेरे पास राय को कौंसिल को चिट्ठी भेजा उसको मैं ने पाया। और पढ़ के सब हाल मालूम किया।

उसने चार बातों के लिये बड़े जोर स्वर से लिखते हैं उस के जवाब में मेरा कहना यही है कि जो कुछ उसने लिखा है उसमें तीन बातें तो बहुत ही आवश्यक है पर लड़कों के कारण इच्छा पूरी नहीं होती है।

पहिली बात उसने बगड़ टोली में चम्पियाबाबू के विरोध लिखा है। यह तो इच्छा और आवश्यक बात है। बगड़ी टोले का मालूम है कि Popular Preaching नाम है। जिस पर भी बहुत लोग पढ़ता है पाठशाला चलाने के लिये कोशिश किया जाता है। इसी काम के लिये वहां मात्र युवक भी ठहराये गये हैं। उन के द्वारा जहां हो सकता है किन्तु किन्तु संस्कृति लोगों को बात सुनाया जाता है पर जैसा चाहिये वैसा काम नहीं चलता और पाठशाला भी सवाई भी ठीक रीति से नहीं होता है। कारण यही है कि इन्होंने पैसा का बात भी उस में है।

दूसरी बात —

इसी कारण से प्रयत्नों का हिसाब करना भी और कुछ अनुमान मुश्किल जान पड़ता है। और यहाँ भी उचित रीति से उन का हिसाब नहीं कर सकता है। बड़ा शिखर में जितनी मराठियां हैं उनको सामान्य निरीक्षण किया तो मानो छिपती हुई हैं। वे एक दूसरे से बहुत दूर-२ पर बसी हुई हैं। और उन में जन संख्या भी बहुत कम कम है। उन में पूर्णायुत-संख्या भी नहीं है, केवल उनमें से दो मराठियां हैं जिन में एक सौ और पचास पूर्णायुत-संख्या है, बाकी बहुत्व में दो— चार— और चौदह लगभग है। इसलिए हम ऐसा अनुमान कर सकते हैं कि असफलता हो सकती है वह क्यों? एक यात्री को सफर करने में रेल और मोटर के द्वारा जाना पड़ता है। आना जाना कम है और कम [illegible] होता है। यह प्रयत्न [illegible] देवगढ़ में है जो रांगडांगपुर से ६०—७० कोस दूर है। यह प्रयत्न केवल [illegible] मराठी का परम बताता है। मैं उनको १९२२ में [illegible] किया तो [illegible] में चौबीस पूर्णायुत-संख्या है। उस को पहिले कोई प्रयोजन नहीं रखा था। साल में केवल दो-चार जगह देवगढ़ जाया करते हैं सो आप को न भूलतो।

तीसरी बात — सामान्य बड़ा देशों में [illegible] लोग बहुत ~~[illegible]~~ गरीब हैं। मराठियों में जो [illegible] ६८ रुपया [illegible] उन को उचित रीति से पाना ~~[illegible]~~ कठिन जानपड़ता है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Johan Bhengra.

Church Council
Received 15.3.29.
Register No 589.
Date 21.2.29.
File 18.
Reply No.......
Date...............

The Secretary,
G. E. L. Church, Ranchi
Dated the 21st February 1929

આદરવર-સેક્રેટરી-સાહેબ-કો-ઓર-સે-હમોં-કો-યોગ્ય સલામ-હોવે-।

આગે-જિસવક્ત-કા-પતા-હૈ-કિ-મુન-ડિભાર-સહેબ-કો-બારબે-
ઇસ-સ્ટેટ-મેં-ધર્મપ્રચાર-કરને-કે-લિયે-અનુમતી-પોલિટિકલ-એજેંટ-
સે-માંગને-કે-લિયે-કહા-ગયા-થા-ક્યોંકિ-ઇસ-સ્ટેટ-મેં-ધર્મપ્રચાર-
કરના-બિલકુલ-સ્ટેટ-મના-કિયા-હૈ, પર-માલૂમ-કી-બાત-હૈ-કિ-
ચાર્ચ-કૌંસિલ-અબ-તક-ઇસ-વિષય-મેં-કુછ-ભી-ફૈસલા-કો-
બખોબસ-નહીં-કિયા-હૈ-સો-બડી-માલૂમ-કી-બાત-હૈ-જૈસે-
મૂન-ડિભાર-સહેબ-યહાં-કા-દીવાન-સાહેબ-સે-ઇસ-વિષય-મેં-સ્વયં-
દર્યાફ્ત-કિયા-થા-ઔર-દીવાન-સાહેબ-સે-ઐસા-હી-જવાબ-ઉન-કો-દિયા-
ગયા-થા, પીછે-મેરે-પાસ-આકે-મુઝ-કો-બોલા-કિ-મૈં-ઇસ-કા-
બખોબસ-જલ્દ-જરૂર-કરતા-હૂં-પર-આજ-માલૂમ-અબ-તક-કુછ-
ભી-કોઈ-ભી-ફૈસલા-નહીં-કિયા।-સો-મૈં-સમઝતા-હૂં-કિ-અબ-મૈં-
સ્કૂલ-કા-આંગ-મેં-મિલ-ગયા-હૈ-ઔર-હમ-કો-પૂરા-વિશ્વાસ-હો-
ગયા-હૈ-કિ-મૈં-અચ્છા-રાસ્તા-મેં-આ-ગયા-હૂં-ઔર-મૈં-યહાં-કા-
માલિક-ઠહરાયા-ગયા-હૂં-ઔર-મેરા-કર્તવ્ય-કામ-હૈ-કિ-ઔર-
ચાર-લોગ-ભી-કિ-ઇસ-સ્ટેટ-કે-ભીતર-મેં-હૈં-ભી-કિ-અભી-તક-
ઉન-લોગ-અંધકાર-મેં-પડે-હુએ-હૈ-ઉન-કો-જ્યોતિ-દેના-મેરા-કર્તવ્ય-
કામ-હૈ-અગર-મૈં-ઇસ-સ્ટેટ-મેં-અપના-જ્યોતિ-નહીં-ફૈલાઉંગા-
તો-ઈશ્વર-કે-આગે-મૈં-ક્યા-જવાબ-દૂંગા-ઇસ-લિયે-મૈં-ચાર્ચ-
કૌંસિલ-મેં-ફિર-ભી-નિવેદન-કરતા-હૂં-કિ-વહી-ઇસ-
મિશન-કા-રક્ષક-હૈ-જો-કિ-સબ-ભાર-ઇસ-કે-ઊપર-હૈ-
ઔર-સબ-કુછ-બખોબસ-કરને-વાલા-હૈ-। અગર-ચાર્ચ-
કૌંસિલ-સે-ભી-મદદ-નહીં-હો-સકતા-હૈ-તો-વૈસા-હી-જવાબ-
મુઝ-ગરીબ-કો-દિયા-જાય-જિસ-સે-મૈં-અપના-કર્તવ્ય-
કામ-ફૌરન-શુરૂ-કરુંગા-ઇસ-સ્ટેટ-મેં-।-ક્યોંકિ-મૈં-
દારીક-કે-લિયે-કોઈ-બાત-કા-ફિકિર-નહીં-કરતા-હૂં-
અગર-મુઝ-કો-સ્ટેટ-ઇસ-વિષય-મેં-જેલ-ભી-દેવે-
તોભી-મૈં-નહીં-ડરતા-હૂં-ક્યોંકિ-સ્ટેટ-સે-બઢકર-મેરા
ઈશ્વર-હી-હૈ-વહી-મુઝ-કો-સબ-કુછ-બતલા-દેગા-
વો-ઇસ-કામ-મેં-મદદ-કરેગા-ઇતના-મેરા-વિશ્વાસ-હૈ-
ખુશી-કા-પતા-હૈ-કિ-હમ-લોગોં-કા-નવલોક-યાને-ઇસ-સ્ટેટ-
કે-રહનેવાલા-ભાઇયોં-કા-ભી-ચાર્ચ-કૌંસિલ-કો-સલામ-દેતે-હૈં-

કિ-હમ-લોગોં-કો-પ્રાયઃ ૧૪ વરસ-હો-રહા-હૈ-ખ્રુસ્તાન-હુએ-હૈ-પર-ઠીક-
સે-મતલબ-કોઈ-મિશનરી-ઔર-પાદ્રી-લોગ-હમ-લોગોં-કો-નો-બરાબર-
હૈ-ઠીક-સમય-પર-નહીં-દિયા-જાતા-હૈ-ઔર-પ્રભુભોજ-મિસ-કે-લિયે-
હમ-લોગ-પિયાસે-હૈ-ઉસી-કે-લિયે-કોઈ-મિશનરી-ઔર-પાદ્રી-લોગ-
ઇસ-સ્ટેટ-કે-ખ્રુસ્તાન-ભાઈયોં-કે-લિયે-કુછ-ચિંતા-નહીં-કિયા-
જાતા-હૈ-સો-કૈસી-બડી-અફસોસ-કી-બાત-હૈ-હમ-લોગ-યહાં-સંસાર-
ભાઈયોં-કે-સમાન-માલુમ-પડતે-હૈ-પર-તૌભી-હમ-લોગ-સબર-કિએ-હુએ
રહતે-હૈં-ઔર-ઇસ-સ્ટેટ-કે-લિયે-ના-મિશનરી-ના-ચાર્ચ-કૌંસીલ-
કુછ-ચિંતા-કરતે-હૈં-મગર-ચાર્ચ-કૌંસીલ-ભી-ચિંતા-કરતે-તો-~~[illegible]~~
હમ-લોગોં-કો-ઐસા-હાલત-ભી-નહીં-હોતી-। ઔર-તીસરી-બાત-યહી-હૈ-
કિ-બામડા-સ્ટેટ-કે-ખ્રુસ્તાન-ભાઈ-લોગ-ઔર-હમ-સબ-ઇતના-ગરિબ-
હૈ-કિ-હમ-લોગોં-કો-ગિર્જા-ઘર-બનાને-કે-લિયે-ભી-તાકત-નહીં-હૈ-
ખાસકર-કિ-જિતને-ખ્રુસ્તાન-હુએ-હૈં-વો-સંસારિક-લોગ-ભી-દિન-
ભર-કમાને-પેટ-કે-ધાંદે-મેં-રહતે-હૈ-ઇસી-સે-હમ-લોગ-[illegible]-
લાચાર-હૈ-પર-તૌભી-ઇશ્વર-કી-બડી-મહાત્મા-સે-૯×૭ હાથ-કા- (બડી-કઠિનતા-સે)
ઝોપડી-ઘર-હમ-લોગ-બનાયા-હૈ-ઉસી-મેં-સબ-ખ્રુસ્તાન-ભાઈ-લો-
મિલ-કર-ઇશ્વર-કી-આરાધના-કરતે-હૈ-પર-તૌભી-બૈઠને-તક-કા-
જગહ-ભી-નહીં-હોતા-હૈ-। પર-લાચાર-હૈ-કિ-દુસરા-ઉસ-સે-
ભી-બડા-ઝોપડી-ઇશ્વર-કી-આરાધના-કે-લિયે-બનાયા-જાય-
ઇસ-સે-ચાર્ચ-કૌંસીલ-અચ્છી-તરહ-માલુમ-કર-સકતા-હૈ-કિ-
બામડા-સ્ટેટ-કે-ખ્રુસ્તાન-ભાઈયોં-કી-ક્યા-હાલત-હૈ-પર-તૌભી-
ઇશ્વર-પિતા-હી-હમ-લોગોં-કો-ચલાતા-હૈ-। ચૌથી-બાત-યહી-
હૈ-કિ-પ્રાયઃ તીન-ચાર-બરસ-હો-ગયા-હૈ-કિ-હમ-લોગ-[illegible]-
પ્રભુભોજ-મેં-ભુખી-હુએ-હૈ-સો-કૈસી-બડી-અફસોસ-કી-બાત-હૈ
(યાને-કરિબ-૧૯૨૨ સે-મતલબ) સો-મગર-ચાર્ચ-કૌંસીલ-ઇન-સબ-
બાતોં-કે-લિયે-ચિંતા-કો-[illegible]-નહીં-કરેગા-તો-કિસ-જગહ-
કે-લિયે-કર-સકતા-હૈ-। અભી-ચાર્ચ-કૌંસીલ-કો-ચાહિયે-
કિ-જહાં-કિ-ઇશ્વર-કા-રાજ-ફૈલાયા-નહીં-ગયા-હૈ-ઉસ-જગહ-
કે-લિયે-જ્યાદા-કોશિશ-કરના-ચાહિયે-। મૈં-ઇસ-ખત-કો-
બહુત-દુઃખિત-કે-સાથ-ખાસ-ચાર્ચ-કૌંસીલ-મેં-પેશ-કરતા-
હું-~~[illegible]~~-બિના-પાદ્રી-કે-મદદ-સો-મેરા-ઇસ-ઉજૂર-જો
કિ-ચાર્ચ-કૌંસીલ-મેં-ગુજરા-કિયા-જાવે-કો-હમ-
કો-ઇસ-કા-જવાબ-સીધા-ચાર્ચ-કૌંસીલ-સે-
જહાં-તક-જલ્દી-હો-સકે-મિલના-ચાહિયે-। બાદ-કિ-મૈં-
ઇશ્વર-કા-રાજ-ફૈલાને-કે-લિયે-ઇસ-સ્ટેટ-મેં-તરસ-રહા-હૂં-
આગે-શુભ-હજૂર-કો-જુગ-જુગ-[illegible]-

[illegible] (marginal note, written vertically)

[illegible]-

Dharamprakash Here
Pracharakh, Deogarh
Bamra State
P.O. Deogarh
Sambalpur Dist.

THE COUNCIL OF
The Gossner Evangelical Lutheran Church
in Chotanagpur & Assam.
RANCHI, (Behar) INDIA.

Memorandum.

No. 585/29
F. - 18

Dated Ranchi, the 18th March 1929.

The letter of Dharma Prakash HHeren, Pracharak Deogarh is sent in original to the Rev. John Bhengra, Ilaka Chairman, RAjgangput, for favour of opinion and an explanation at an early date.

Secretary.

Church Council
Received 15.3.29.
Register No. 589.
Date 21.2.29.
File 18
Reply No.
Date

To.

The Secretary
G. E. L. Church, Ranchi
Dated the 21st February 1929.

मान्यवर सेक्रेट्री की ओर से हमों को पायुसहाय होवे।

आगे लिखने का यह है कि मृत डिलर साहेब को दो दफे इस स्टेट में धर्म्म प्रचार करने के लिये अनुमती पोलीटिकल एजेंट से मांगने के लिये कहा गया था कहे कि इस स्टेट में धर्म्म प्रचार करना बिलकुल स्टेट मना किया है सो क्या बड़ा अफसोस की बात है कि चार्च कौन्सिल अभी तक इस विषय में कुछ चेता औ फिकिर और बन्दोवस्त नही किया है सो क्या बड़ा अफसोस का बात है जौभी मृत डिलर साहेब यहां का दीवान साहेब से इस विषय में खुद तहतक किया था और दीवान साहेब से भी ऐसा जवाब उन को दिया गया था पीछे मेरे पास आ के मुझ को बोला कि मैं इस का बन्दोवस्त बहुत जल्दी करता हूं पर हाय अफसोस अभी तक कुछ भी कोई भी जिम्मा नही किया सो मैं समझता हूं कि अब मैं खृस्त का अंग में मिल गये हैं और मुझ को पूरा बिश्वास हो गया है कि मैं अच्छा रास्ता में आ गया हूं और मैं यहां का प्रचारक भी ठहराया गया हूं और मेरा कर्त्तव्य काम है कि और भाई लोग जो इस स्टेट ~~में हैं~~ के भीतर में हैं जो कि अभी तक उन लोग अंधकार में ~~हैं~~ पड़े हुए हैं उन को ज्योति देना मेरा कर्त्तव्य काम है अगर मैं इस स्टेट में अपना ज्योति नही फैलाऊंगा तो ईश्वर के आगे में क्या जबाब दूंगा इस लिये मैं चर्च कौन्सिल में फिर यह पेश करता हूं कहे कि वही इस मिस्सिन का एक सिर है जो कि सब भार उस के ऊपर है और सब कुछ बन्दोवस्त करने वाला है अगर चर्च कौन्सिल भी यह नही हो सकता है तो वैसा ही जवाब मुझ गरीब को दिया जाए जिस्से मैं अपना कर्त्तव्य काम तुरन्त सुरु करूंगा इस स्टेट में। क्योंकि मैं शरीर के लिये कोई बात की फिकिर नही करता हूं अगर स्टेट मुझ को इस बिषय में जेहल भी देवे तौभी मैं नही डरता हूं कहे कि स्टेट से बढ़ कर मेरा ईश्वर है है वही मुझ को सब कुछ बतला देगा और इस काम में मदद करेगें इतना मेरा बिश्वास है और दूसरी बात ~~है~~ यह है कि हम लोगों की तकलीफ याने इस स्टेट के खृस्तान भाईयों की भी चर्च कौन्सिल को जाना देते हैं, कि हम लोगों को प्राय: १४ बरस हो रहा है खृस्तान हुए हैं पर तब से अब तक कोई मिशनारी याने पादरी लोग हम लोगों को जो दरकार है तिस समय पर नहीं दिया जाता है याने प्रभु भोज जिस के लिये हम लोग पियासे हैं उसी के लिये कोई मिशनारी याने पादरी लोग इस स्टेट के

खृस्तान भाइयों के लिये ~~कोई मिश्नरी~~ कुछ चिन्ता नहीं किया जाता है सो कैसी बड़ी अफसोस कि बात है हम लोग यहां संसार भाइयों के समान मालुम पड़ते हैं पर तौ भी हम लोग सब छिपे हुए रहते हैं याने इस स्टेट के लिये न मिस्सनरी न चर्च कौन्सिल कुछ चिन्ता करते हैं अगर चर्च कौन्सिल भी चिन्ता करते तो जरूर हम लोगों की ऐसी हालत भी नहीं होती और तीसरी बात यही है कि बामड़ा स्टेट के खृस्तान भाई लोग याने हम सब इतना गरीब हैं कि हम लोगों को गिर्जा घर बनाने के लिये भी ताकत नहीं है कारण कि जितने खृस्तान हुए हैं सो संसारिक लोग भी दिन भर अपने पेट के धंधे में रहते हैं इसी से हम लोग बहुत लाचार हैं पर तौभी ईश्वर की महा कृपा से ६,७ हाथ का झोपड़ी घर हम लोग बड़ी कठिनता से बनाया है उसी में सब खृस्तान भाई लोग मिल कर ईश्वर की आराधना करते हैं पर तौभी बैठने तक की जगह भी नहीं होता है पर लाचार है कि दूसरा उस से भी बड़ा झोपड़ी ईश्वर की आराधना के लिये बनाया जावे, इस से चर्च कौन्सिल अच्छी तरह से मालुम कर सकता है कि बामड़ा स्टेट के भाइयों की क्या हालत है पर तौ भी ईश्वर पिता ही हम लोगों को चलाता है। चौथी बात है यही है कि प्राय: तीन चार बरस हो गया है सिर्फ हम लोग एक बेर प्रभु भोज में भागी हुए हैं सो कैसी बड़ी अफसोस की बात है (याने करीब १९२२ से अब तक) सो अगर चर्च कौन्सिल इन सब बातों के लिये चिन्ता और बन्दोबस्त नहीं करेगा तो किस जगह के लिये कर सकता है अभी चर्च कौन्सिल को चाहिये कि जहां कि ईश्वर का राज्य फैलाया नहीं गया है उस जगह के लिये ज्यादा कोशिश करना चाहिये। मैं इस खत को बहुत दु:खित के साथ खास चर्च कौन्सिल में पेश करता हूं विनी पादरी के मारफत सो मेरा इस उजूर को और विन्ती चर्च कौन्सिल में ग्रहण किया जावे और हम को इस का जवाब सीधा चर्च कौन्सिल से जहां तक जल्दी हो सके मिलना चाहिये। क्योंकि मैं ईश्वर का राज्य फैलाने के लिये इस स्टेट में तरस रहा हूं।

आगे थुम्म कसूर और भूल चूक माफ करिये।

दा: धर्म प्रकाश हेरे

Dharamprakash Here
Pracharakh Deogarh
Bamra State
P.O. Deogarh
Sambalpur Dist.

हम लोग प्राय: महीने में एक बेर प्रभु भोज में भागी होने चाहते हैं

THE COUNCIL OF
The Gossner Evangelical Lutheran Church
in Chotanagpur & Assam.
RANCHI, (Behar) INDIA.

Memorandum.

No 476/29
F.-18.

Ranchi, the 1st. February, 1929.

To,
The Rev. Nathaniel Tirkey.

Rajgangpur. B.N.Ry.

Manyawar Padri Ap ko Council ka bahut Yishusahay !

Ap ka darkhast jo ap ne mere pas phir se padri kam karne ki anumatti ke bishay men likha tha use main ne Council men pesh kiya.Council ne ap ke bishay men yah Sankalp kiya hai, arthat :-

KI PADRI NATHANIEL TIRKEY KO SUNAYA JAY KI WE BAMRA ILAKE MEN PADRI KI SEWAKAI KA ADHIKAR PATE HAIN WAHAN WE KAM KAREN AUR RAJGANGPUR ILAKE KE SAMBANDH MEN RAHEN.

Main asha karta hun ki Council ke is bichar ko ap grahan karenge aur mandali men phir se sewakai ka kam anand se arambh karenge. Ishwar ap ki sahayta karen !

Age shubh,
[signature]
Secretary to the Church.

THE COUNCIL OF
The Gossner Evangelical Lutheran Church
in Chotanagpur & Assam.
RANCHI, (Behar) INDIA.

Memorandum.

No. 495/F.18 /29.

The Ilaka Chairman,
Rajgangpur.

Manyawar Padri Johan Bhengra ko Council ka bahut bahut Yishusahay howe !

Age, ap ko main do darkhast bhej deta hun jo ki pahile jo pracharakpan N.M.S. ke sambandh men the aur abhi Rajgangpur Ilake men laye gaye hain. Ap in darkhaston ko Ilake Panch ke sahmne men dhariye aur bane to chahe un logon ko bhi bulaiye athawa unke pas ap jaiye aur batchit kijiye. Main in darkhaston ko ap ke pas bhejta hun kyonki un bhaiyon ne upar upar ap logon ke pas men nahin deke mere pas bheja. Unko ap samjha dijiye ki bhawishyat men sidhe nahin parantu Ilake ke jariye se mere pas likhen. Hone sakta hai ki we bahut baton ko likh sakenge jo sach nahin hain aur jo ek dusre ka thik na bujhne ke dwara se hue hain.

2. Ap shighr M. Padri Prabhusahay Horo ko likh kar janaiye ki unhon ne jo ek chithhi mere pas likhi thi Premprakash ki dusri sadi ke bishay men ,usmen Council kahti hai ki dusri sadi ke liye wah ray nahin de sakti hai kyonki bahut jokhim hai. Premprakash ko sallah diya jawe ki wah Gangpur ke Dewan ke pas men darkhast dewe aur yadi Dewan likh ke hukum de sake to ap sadi dene sakte hain,aur nahin to nahin ho sakta hai. Officially pichhe Prabhusahay babu ko likhunga parantu der na ho isi liye ap ke jariye likh raha hun.

3. Council ka sankalp hai : Ki Padri Nathaniel Tirkey ko sunaya jay ki we Bamra Ilake men Padri ki ~~xew~~ sewakai ka kam aur adhikar pate hain wahan we kam karen aur Rajgangpur Ilake ke sambandh men ~~xxx~~ rahen.

Age shubh,

[signature]

Church Council
Received 21.1.29
Register No. 483
through the Pracetor (?) Date 16.1.29
File 18
Reply No.
Date

Rajgangpur
16 Jan 29

Manewar mahasay church council ko ham logon ka yishusahay.

Ham logon ne ap ka chitti No 458/29 F. 18 paye, aur number I ke sawal ka jabab, arthat Padri Nathaniel Tirkey ke phir kam karne bishay ray ka jabab pichhe bhejange likha. Baki No. 2 ka jabab 10 January ko bhej chuka.

Aj tarikh 16 January ko Ilaka baithki hua, jis men nimin likhit Pracharakpan ko log hajir the. Kumarkela se Samueltoli, Bhagattoli, Hata kinare toli, aur Parsingh, aur baki tolong se jin gagahon men us ka anbanao tha, aur S.P.G. taraph ulat gaye, arthat Ranibandh, Tilaimunda Banspara, aur Hata ke kaiek jan nahin hajir huwe, jin se ki us ka anbanao hai. In log chitti duara janaye ki koi dusra jagah kam kare to kare, par Hata men nahin; Aur aros paros pracharakpanon se na chitti bhej na aye, un log jabani kahla bhejg ki ham logon ko manjur nahin hai, us meeting men nahin baithenge.

Hajir huwe logon ne kaha ki jahan mandli Salwant hai, aur mandli ke liye achha hoga, aur bhalai hoga, ohan kam kare.

Padri Nathaniel Tirkey ke darkhast chitti ko jabab ke sath men lauta dete hain.

Ap ka agyadhin

Johan Bhengra
Prabhusahay Horo
Amus Bara

[illegible]

[illegible] No. 455(2)/7.18 [illegible]

[illegible] 16 January [illegible]

[illegible]

Church Council
Received........
Register No........
Dated........
File........
Reply No........
Date........

Through the Secretary

Rajgangpur
25-9-28

महामान्यवर लूथेरान चर्च कौंसिल को मुझ अधम जन का बहुत यीशुसहाय ॥-

आगे आपको मालूम है कि मैं २½ बरस से ऊपर बिमारी कुछ में रहता हूं जिसके कारण से मंडलियों में प्रभु का बचन बोलने को मेरा मुंह बन्द किया गया है। अब आप से मेरी दीनतापूर्व्वक यह अर्जी है कि कृपा कर मुझको मंडली में काम करने की अनुमति अनुग्रह से प्रदान कीजिये, क्योंकि पादरी नाम रखकर चुप रहना अच्छा नहीं लगता है। यह काम मुझको जीवन भर के लिये दिया गया है सो दया कर मेरे लिये कुछ उपाय किया जाय ॥

इस दया के लिये मैं सदा आपका धन्यवादी बना रहूंगा ॥-

आगे शुभ

आपका आज्ञाधीन दास

Nathanael Tirkey

Church Council
Received 28.9.28
Register No. 305
Date 25.9.28
File 18
Reply No........
Date........

Forwarded in original to the Ilaka Chairman, Raiganj for favour of the Ilaka's opinion.

[signature]
Secy.
5 Jany: 1929

Church Council
Received 15/1/29
Register No. 468
Date 12/1/29
File 18
Reply No. ....
Date ....

[illegible]

Manya Secretary sahib

P. Hurad Kripa Karke is Kagaj ko jitna jaldi hane utna c.c men pesh kariye main binti karta hun.

L. Horo

12.1.29

સાથ રહતા है।

બાપુજી મહાત્મા

પો- ઓ૦ સાબરમતી

જીલા અમદાવાદ

સલામ

उસ-સ્ત્રી-ભાઈ-કા-પહિલા-પુત્ર-પ્રભુનાથ-
સહાય-દુસરી-શાદી-કરને-ચાહતા-है-ઔ-
ઇલાકા-રાજગાંગપુર-પાદ્રીયન-હાકીમ-પ્રાટેસ્ટન્ટ
મુસલમાન-લેતા-હકિકત-કે-પવિત્ર-કા-બહિન
મરિયમ-જુવાની-કો-માંગની-કિયા-है-વો-શાદી
~~માંગ~~ માંગતા-है-પર-મૈં-ઐસા-દવા-જાનકે-
શાદી-દેના-મુશ્કિલ-કો-માન હોતા-સમઝ.
અનુમોદા-આપ-આપ-કે-લિયે-યહ-લિખતા-हु
જુવા-જનકે-हुजुर-ફરમાઇ-જાયે-
જાના-उસ-પુત્ર-પ્રભુનાથ-કા ^દુસરી^ શાદી-~~જુવાની~~
~~[illegible]~~ હો સકતા-है ?

પાદ્રી- Prabhusahay Horo.
Ghoghar: Raibaga
Rajgangpur
B.N.R.

12.1.29

Church Council
Received 12.1.29
Register No. 457
Date 10.1.29
File 18/7
Reply No. ....
Date ....

Rajgangpur
10th January 1929

Manewar Mahasaye, Church council Secretary ko ham logon ka yishusahay.

āp ka chithi No $\frac{408/29}{J\ 18}$ mila.

1. Padri Nathaniel Tirkey ka darkhast kabat jabab dusri habta lāt bhejinge, abhi lāt Ilaka phaisala nahin hua.

2 (a) Prabhudan Bage, Rajgangpur school ka ek mastir hai, jisko abhi chhutti mili hai. wah Karimati Ilaka ko Tiliapori gaon ka hai. Emanuel Toppo ko ham nahin jantin hain, kaun hai? koi ihan aisa nam ka jan nahin hai. (kadachit Esmael Toppo hoga) Nakal bhejne se ham log malum karle.
C. D. S. kadachit C D. B hoga (Jane Christo Dham Bage) wah Ghoghor Parish ke Barmal ka hai. jo Rajgangpur school men mastir kam karta thā, abhi us ko chhutti mila hai.

(b) Aj kal sadharanta mandli ki dasha achha hai.

(c) Miss Diller donon bahinon ka kam santosh janak hai, school ka staff bhi khusi se sahajog deke chalti hai, Itan Miss A Diller school ke liye bahut parisaram aur chinta, aur jowalanta se kam karti hai.

Ap ka agyadhin
Johan Bhengra
Prabhusahay Horo
Johan Topno.

no. 432 File 18.

B.A. 25/12/28

Confidential

To The C. C. of Lutheran Mission in
Chota Nagpur & Assam.

Through the Secy: to the C. C. Ranchi.

Dear Sirs,
Most humbly and respectfully I beg to state the following under your kind perusal. –
That the lady missionaries do not know the rules of Autonomous Church and subsequently they do not know how to behave with others. Miss A. Diller thinks that she has got supreme power over everyone and anyone, in every respect. She is too much suspicious unbeliever and obstinate. Mostly she calls other people to threaten them and to say harsh words to them instead of elucidating them with love and mercy. Furtherly that she used to stroll about in the streets and jungle with a Non Christian English gentleman of Amghat Khadhan she could not enjoy his company for long days, as approximately six month's association with her he deserted from Amghat. This is the reason why she has become suspicious of others and now she thinks herself unstained. But still she is taken to be silly and partial, as she does not forbid her own sister miss R. Diller. She is always seen in the company of another English gentleman. They stroll about with in motor, side cars like married couple. This information would not have reached you as the leading officers have failed to culture moral courage.
Your honours may come and make an enquiry of this, whether it is true or erroneous.

P.T.O.

A bad rumour has spread in the towns of Amghat and Raj Ganghur. This matter has become subject to deprecation of Lutheran Christian in front of Non Christians. Mrs Diller has also adopted narrow-minded policy in many matters. She has transferred the Charge of buying rice from masters to an out sider woman's hands. ~~but she is not least hesitated~~ lest the masters would embezzle the money. But she is not least hesitated in allowing her daughter R. Diller in the gayous Company of a Non Christian man. Sorry! Extremely Sorry! for such missionaries who show bad examples to others. They see other's fault with magnifying glass but are completely blind and heedless about their owns. How can she stroll about with an unmarried Young man being the daughter of a missionary? if the girls are not allowed to bring water for their masters of this School. Had it been the case of a Native morality and impartiality would have been practised but on account of European's Cases partiality and Cowardice are playing extraordinary part.

Is it that their religion & Bible ~~and the~~ are different also? as skin is different or what?

Hoping to be excused of the mistakes.

Raj Ganghur
The 4th Dec 28

Identifications of
Prabhudan Baze
Ismael Topno

I have the honour
to be Sir
Your most Obedient
Servant
C.A.S.

458/29
F.-18.

5th. January, 1929.

The Rev. Johan Bhengra.
G.E.L. Compound.
Rajgangpur.

Manyawar Padri Babu John Bhengra ko mera bahur Yishusahay !

1. Main Council Executive ki ichchha anusar Manyawr Padri Nathaniel Tirkey ka darkhast ORIGINAL hi bhej deta hun, jisten Ilaka iske sambandh men kya samajhti hai so apni ray deke Council ko shighr hi lauta dewe. Is mahine ke 23 tarikh tak Council ke baithne ki sambhawna hai so jaldi hi iska hal ana chahiye. Is par bishes dhyan dena may bhulna.

2. Main janne chahata hun ki Prabhudan Bage aur Imanuel Toppo & ek jan C.D.S. kaun hain. Aj kal wahan mandali ki kaisi dasha hai aur ki Miss Diller log donon bahinen kaisa kam karti hain aur unke kam ke sambandh men main samajhta hun ki ab sab kuchh santoshjanak hai aur school ke kam men staff bhi khushi se unke sath men sahayog deke kam karte hain. Yah sadharan samachar main kuchh bahut sunne chahata hun, so jaldi se mujhe likh bhejna.

Is naye sal men Prabhu Parameshwar tumhon ke kam par bahut ashis aur saphalta dewe !

Prem se,

SECRETARY.

Jambahal ता: ५।१०।१९२८

Church Council
Received 10·10·28
Register No. 321
Date 8·10·28
File 18
Reply No..........
Date..........

श्री श्री ६ श्री पूज्य महाशय धर्म्म मण्डली पालक प्रेसिडेन्ट सेक्रेटेरी चर्च कौंसिल और सहायक मेम्बर चर्च कौंसिल को
अर्जी निवेदन के साथ योशु सहाय —

आगे मेरा अर्जी चिट्ठी फिर के लिखता हूं कि मैं ने बेन्यामिन मिंज सेक्रेटरी मेम्बर कौंसिल के नाम पर मेरे हरएक तरफ का हाल को जनाया और उस में गुस्से में पड़ी देखा को एक बेर पंचैत किया गया।

२ दूसरा फिर मैं ने उसी के नाम पर चिट्ठी लिखा कुछ जवाब मिला नहीं — तो मैं फ़ज़ल लकड़ा को मालूम किया कि वह भी मेम्बरों में से एक है बोल कर चिट्ठी लिख छोड़ा तो मुझ को एक कार्ड मिला जिसमें लिखा हुआ है कि तेरा सब चिट्ठी पादरी डिलर के यहां भेजी गई है। उनसे पूछ लीजिये कि वे उनको विश्वास करते हैं। और उस में इमानुएल लकड़ा वास्ते कौंसिल के ग्वाह है।

३— तीसरा फिर मैं ने वाही इमानुएल लकड़ा कौंसिल के नाम पर चिट्ठी लिखा तो एक कार्ड फिर मुझ को मिली जिसमें लिखी हुई है कि कई एक चिट्ठी कौंसिल को मिली है अपना चिट्ठी इलाके के जरिये कौंसिल में लिख भेजो। और उस कार्ड में पिंदर हूरद मेम्बर कौंसिल के ग्वाह है। ४— महाशयो मेरा चिट्ठी कौंसिलों में जनाया सो वही वर्ष लग चुकी है और मेरा चिट्ठी भी इसके साथ १२ चिट्ठी पूरा १२ चिट्ठियों में से एक भी बात आप सभों के लिये नहीं निकला परन्तु मेरे चिट्ठी को कुछ निष्फल खबर मिली है नहीं क्या मालूम महाशय कौंसिलों से मेरा अर्जी है कि यदि चिट्ठी से मालूम नहीं पाते हैं तो सरजमीन हाकिमों के ऐसा कर लीजिये — विचार छोड़ दें आप सब धनि अथवा बड़े पदवी वालों पर अकेला ध्यान ओ नजर मत करिये ✗ काहे कि डोकर को छोड़ के भी देश में बैठ जिड़ी कूटी में काम चलाते हैं। — वैसा ही परमेश्वर गरीब को भी बोलता आज्ञा दिया है प्रचारक पादरी सब बोलेंगे कि हमारा इलाके में एक स्त्री है जिस को आराड़ देती है बोल कर लिख भेजेंगे तो क्या लिखा ही को विश्वास करेंगे कि उन बातों को दरयाफ्त करेंगे भी आप सभों के इच्छा सोई सुनाइये चाहे जांचने चाहते हैं। तो मैं काशम खां के हकीकाती बयान कर देऊंगा भी जब तक ईश्वर मेरे साथ रहे तब तक से

परमेश्वर आगे आप सभों को मराडली सभा चलाने बुलाने
का जो देखने ताकने को मेम्बर चुन दिया है कि पृथिवी में
आप सब मेरा बिचार कोई सुरत कीजिये मरन जिइ का परमेश्वर
पृथिवी के बिना बहि मञ्जाप हुए आप आप का लगा
महाशयो कौंसिलों से बिशस आशो के साथ में चिट्ठी लिखदिया
जो कोइ खबर सुनाया जाय। {

Andriyas Minj Jambahal

Jambahal - ता. 28-९-१९२८

Church Council
Received 26·9·28
Register No. 306
Date 24·9·28
File 18
Reply No.........
Date.........

श्री श्री ६ श्री युक्त मन्यावर मण्डली पालक पिटर हुरद सेक्रेटरी चर्च कौंसिल और
सहायक मेम्बर चर्च कौंसिलो को यीशु सहाय —

आगे मेरा निवेदन चिट्ठी आप सभों को जानता हूं। की योहन नेगरा पादरी राजगांगपुर
कुमर केला का एक बात खुब जारी किया और पुछा कि जवाब देहो कौन होंगे
पादरी याने आपका के लड़का और लड़की लड़का के मा बाप इसी बात का
जवाब मुझे जारि की साथ मागा — पर जवाब तो हम नही देने सका पर पाहो
मैं निश्चय ख्याल है और करता हुं कि हम कैसे जवाब दे सकुगा क्यों कि मैं तो
आभी दुखमतहो ठहर गया हु और लड़की अपनी पगली हो बिमार मे तड़प रहि है।
और मेरे मां बाप और लड़की की मा बाप याने लड़की भी पादरी सब क्या जाने कोई ऐसा
बोलता ते है। उस समय मे उनके साथ भी क्या जान रहि की नही मैंने ताला बराबर
पादरीयों के पिछे २ कह दिये। और अभी पादरी प्रचारक मुझे जवाब मागते है।
मैं कहां से दे सकुंगा— हां मेरे मां बाप मेरे सामने पाहो जवाब पहुचावेंगे आप लोगों को
चाहे और होटी फुरती करके पक्का कर तयार करो और पादरी के आगे धरो। और उसके
समान पह को मुगी का मासु गमर लेके पादरी के आगे धर देना मेहरबानी पहो
तो मेरे मा बाप को जवाब देहो

(१) आगे मेरा हलत का बयान।

(२) बात — लड़की को नजर गुजरान करने वास्ते मुझको ठक करके लेगये और वहां
मुझ से कइ बातों को कबुल करार के बात पुछे मैं कुछ जवाब उस जगह दिया नाही
और घर में आके बोल दिया की या बात नही बनेगी तोभी मेरे बात को नही माने
(३) बात — आने वाले वर्ष में मगनी करेंगे बोला तो भी मेरे बात माने नाही और लड़की
मां बाप बोले की आके येही वर्ष मे मंगनी कर लेना पिछे का कोन देखता है।
तो मेरे बाप जाके उनको कोई बात अनुसार मगनी कराया
(३) बात बचन दत समय में भी लड़की के बड़ा बाप से बोल दिया कि यह बात नही
ठीक होती खाना पीना और आस जस करना बन्द ना होवे लेकिन इस बात को छोड़
बोला तोभी मेरे बात को नही मानकर बोला की जो दुश्मा तो है धार पादरी धार बचाता
है। तोभी मैं फिर बोला की जो धर दुश्मा ता है वा समय पर बचता है। कोई नही
बचता भी है। जब पिछे मेरे सिर मे पड़ेगा उस समय कोई पुछेगे भी नही और नही
समझाओगे भी तो भी मेरे बात को नही माने
(४) बात — बचन दत समय मे भी लामबाइ के पादरी पुछा कोई जवाब लड़की
नही दिई तब पादरी बोला की आओ बाहर निकलो तब मैं दल से पिछे
हट गया और धर्म का बात सुनने का लालसा हुआ इसलिये मैं ठहर गया
तब फिर पिछे एक पेड के साथ कोई फुलो फुलो बाते करने को
किताब से मारा और जब जस बचन देते हुई

(५) बात - मैंने बतन दत्त को फिर भी बोला की बचन दत्त होने से भी कुछ
बिगड़ेगा नहीं इन साल केवल बड़ कुटमत का करेंगे लड़की भी आने वाले
समय में प्रभु भोज खायगी और कुछ २ ज्ञान भी धर्म का पावेगी काहे की
प्रभु भोज नहीं खाने से क्या बात को पावे सब लोग सुनाते हैं। इन बातों का भी
सोच नहीं रखते हैं यहां तक बोला बात मैंने - तौभी लड़की का मां बाप बोले
की अपना आदमियों को लेजाओ हमलोग रख नहीं सकेंगे बोले और जबर
जस के कोने का बाजे से जमा[illegible] रुपैया रख कर सादी किई गई है।

(६) बात - सादी होने के थोड़े ही दिन के बाद लड़की झूठी बातें बना २ के
हमारे घर के आदमियों को निंदा अपने मां बापा के सामने जा के बोलने लगी
मुझ को कोई एक बेला खाना पीना नहीं दिये और घर भग कर के जाती समय में
भी रास्ता में अपनी कपड़ा को पानी से भिजो कर के लेजायगी और बोलेगी की देखो
पानी में घिसा २ के मेरा दमाद मार देवे तब पतियार नहीं करोगे कह २ कर बोलने
लगी x तौभी मैं लड़की के मां बापा को इन बातों के बारे बहुत ही समझाया -
और बोला की [illegible] लड़की को कोई एक बात भी नहीं बोले हैं। काहे
को बिना किये हुआ बातों का झूठ बोलने हारों का ईश्वर चाही झूठी
बात बोलने अनुसार दण्ड पड़ा भी देता है बोला और वही झूठी बात बढ़
गई और लड़की जाकर अपने मां बापा के घर में रहने लगी और प्रायः डेढ़ बरस
होते ही के बाद लड़की जुदाई के लिये ठानी x पर मैं अपने साथ बाप भाया को
जुदाई की बात और रोक २ समझाया - परन्तु कोई एक बार बात पहुंचने से
और आदमियों के कोई बात अनुसार जुदाई कर ही दिये और घर को भंगाती
हो ही गई

(७) बात लड़की की जुदाई के खबर सुन कर के लौटिये थोड़े दिन तक लड़की
रही और ना वह लड़की खाना जिना भी नाता चावल बनाना भी ना तो कोई काम
करने के लिये बोलने से भी अपनी ही हठ में रहती थी और कोई काम
ठीक नहीं करती थी कभी नहीं - तौभी मुझ को भर भर चावल का भात
खाता पेट कह २ कर निंदा किई तौभी मैं सह लिया

(८) बात लड़की कुछ दिन के बाद भग गई और मैं भारि बिमारि से मरने के
ऐसा हो गया घरपर हाल भेज दिये तौभी कोई नहीं आस
वैसा ही मेरा बाप भी मेरा भाई भी बिमारी में पड़ गये पर कोई नहीं
आया पहुंचे

९) नोवा बात — आखरि मे मै बिमार से वेग हो कर चला गया और लडको को
मां मुझ को कई बाते श्राप देकर बोली और समय पर मे खाना
पीना भी नहीं दिये — और मेरा बाप भी मर गया और आदमीयो के कहे
अनुसार मै लडको को लेने गया और उसके कुछ दिन तक फिर
और (आने को) इच्छा की और वो भी हरादी और कहना निकाली - तो भी मै
कुछ नहीं बुला लेकिन वो भी मालवाल का बजार मे आ गाव से बजार
लडका आपनो ही है कैसे रह गइ तो मै कान पकड के बोला भी कहरा
बाद तो अफसोस कुछ बनता नही - रखले ही मै लडको लिइ उठो और
दोनो बहीनो भी और मुझको दो बार लठी लगाई एक लाठी मुझ को माडा
चोट लगा और मै लाठी को लुटा और बोला की थोडी ही बात कहता से
चिड आती है तो आपके सा चलना बोला तो मेरा पाव को दोनो हाथ से
पकड ली और छोडने नही / बाद इतने मे मेरा बडा भाई आया और
तुम लोग क्या रोते हो बोलते वे साथ कोइ कुछ झुठी बाते कहकर
लडको भग गइ और है पूरा स्वभाव कमार के माता मां बापो को पैसा लेने से

१०) बात —
यही बातो के होने पूना से प्रचारको को मै समझाने के लिए कह एक बार
बोला और मै खाना पीना नही दिया उस समय का बात को मेरा बाप को
सुनाना और मेरा बाप प्रभु साहब हीरापाडे को सुनाया सब आप को बात
महाशय मोसले ३ तीन बजे मै लडको को आस करवा और फिर हम मै निकाल
गया गांव से आपना निबाह बिताने को

११) बात महाशय जब मै समझाने को बोला तो आप कहते नाबालिग है कोइ नही
सुना आपे और निकलने से प्रचारक रिपोर्ट लिखता है की मरजी से पहुंचाता एक
देखो और पादरी बोलता है कि तुम सरकारी
महाशय इन बातो पर विचार करते है पाना / आप सन्देह करते है तो कोई
जवाब अंग्रेजी कार्यवाही से इस मे आप सब पूछ करके एक चार बार है
पाने खुल्लमखुल्ला विचार करते है आप सभी का बात है मै आपका हाल
मेरा काम [illegible] कहलाते [illegible]
जुल वृक्ष सात करके [illegible]
[illegible]

Jambahal – 22-10-28

श्री श्री श्री युक्त महाशय धर्म प्रचारक लोग आज का सभा कार्य और पिहर हुरद
सेक्रेटरि चर्च कौंसिल और सहायक मेंम्बर चर्च कौंसिल को निवेदन [illegible]

चोखु सहाय —— आगे मैं कार्ड का आपसभा का पहुँच हो लिख भेजा
आगे बढ़ी न होगा लेकिन मैंने बात को विचार करने का कुछ ठिकाना नहीं
मिली है। महाशयो आपसभा ने दो चिठ्ठी कार्ड में लिख दिये हैं। मैं पढ़ा
और केवल मैं जाना नहीं पर आपसभा के चुन हुए पादरी प्रचारकों ने भी
पढ़े परन्तु बिचु [illegible] का भेद छूट गया आपका का कागज मैं उड़ा
मुझको नामालुम परन्तु मैं जानता हूँ कि बिचु का खबर मुझको
मिला नहीं — मालूम क्या है कि खबर नहीं आनाया आता है
महाशय [illegible] डक्टर साहब ने मेरा बयान बांचवाया और मुझ
को बोला बाप बेटा और लड़को तरफ का चिठ्ठी लिखवा कर मुझ
को बोला की इस का काम तो नहीं चलेगा इस का उपाय होवे
अब वह मर गया तो सबही मौत चला आता है
आपस बैठ विचार कितना रखेंगे जिन्होंने मुझ धर्म सिखाये
उन्होंने मेरे [illegible] में बुरा बिघन डाले हैं, अच्छा है
महाशयो बिचु का लिखा मजिए की यही बात बोलता है कि जिस्ते मै
चोखु सा धर्मी से आगे बढ़ूँ क्यों कि जला [illegible] सबही धर्म के
[illegible] ही को नाम लेता है ऐसा बिस्तार देखते हैं, बिचु का लिखा
मेजिएगा पुरे भंडार मेरे लिये आदमियों को बहुत ही नमूना दिखाया
पर जब जस का कोन देख दो चुके हैं अच्छा है
महाशयो बिचु खाल का इच्छा किजिये जिस्ते जात भाई को रख का
आदमी आम हीं लगा आपका सहा हाल को लिख का कौंसिलों को
आवाया परन्तु कौंसिल ने उसका वास्ते पद देने माँगता का
इच्छा किये हैं। बोल में जरूर लिखमें जियेगा
जिन का सुहृद्य पढ़ के और सदा करिये

Your – Andri[illegible] – J. Jambahal

Church Council
Received 28.10.28
Register No. 344
Date 22.10.28
File 18
Reply No.
Date

THE COUNCIL OF
The Gossner Evangelical Lutheran Church
in Chotanagpur & Assam.
RANCHI, (Behar) INDIA.

Memorandum.

No. 341/28
F. 18

To,

Miss A. Diller.
Rajgangpur.

Dear Miss Diller,

Herewith I hand you the Resolution of the Church Council, session Sept.--Oct., 1928. regarding your sphere of work in the Rajgangpur - field.

RESOLUTION: That Miss Diller may be entrusted with the following work in the Rajgangpur Ilaka :
(a) Medical Work. (b) Women's work and (c) The Colporteur's work .

2. That Miss Diller may be appointed as the Correspondent of Lutheran Schools in the Gangpur State.

Ranchi.
15th. October, 1928.

[signature]
SECRETARY.

Church Council
Received...26.9.28
Register No. 297
Date. 24.9.28
File... 18
Reply No.............
Date..................

चर्च कौन्सिल सेक्रेटरी
रांची।

महाशय,

आप को मालूम होवे कि अन्द्रियास मिंज जमबहार के दो कोता दरखास्त के जवाब में मैं यही लिखता हूं कि अन्द्रियास की स्त्री सचमुच पगली मेजाज की है। इसी कारण से दोनों ~~बहुत~~ कितने बरसों से अलग हैं। अभी अन्द्रियास चाहता है कि इलाका उसको दूसरा स्त्री की शादी करने की आज्ञा देवे। परन्तु यह हुकुम देना अनहोनी बात है। क्योंकि स्त्री अचेत पगली तो नहीं है, उसमे कुछ तो होस है। सो कौन्सिल की जो राय है, इलाका को जानती देवे।

आप लोगों का आज्ञाधीन

Johan Bhengra
24-9-28.

जामखाल ता: २०।८।१९२८

Church Council
Received 22·8·28
Register No. 210
Date 20·8·28
File 18
Reply No. ....
Date ....

श्री श्री ६ श्री पूज्य मान्यवर महाशय धर्म मण्डली पालम्पुर [illegible] सेक्रेटरी चर्च कौंसिल और सहायक मेम्बर चर्च कौंसिलों को [illegible] निवेदन सहित प्रभु सहाय —

आगे मेरा निवेदन लिखित चिट्ठी — को महाशय मैं लिखने वाला गरीब हूं आपका को इलाके वाले गराड़ है यह बात मुझ को मालूम है पर परमेश्वर - प्रकाश रूप देखता है परन्तु महाशय आप सभों को इलाके में चिट्ठी द्वारा यह बात सच्ची है या न झूठ है जांचना आवश्यक हो रहा — क्यों - कि सभा कार्य कर्तायों के द्वारा मण्डली है परन्तु मण्डली से सभा के कार्य करने वाले को काम चलाने वाले नहीं हैं कोई भी आप सभों के बात को सत्य को इलाका उठा दे: नहीं सकती है परन्तु महाशयो आप सभों ने मेरे चिट्ठी की बात को अनसुनी होकर दिलेही कर दिये हैं क्या जाने — मैं ने १९१२ से लेकर - १९२८ तक रूखकड़ी समान - तड़पना मिलती है रोगी तो मैं हूं पर कोई भी वैद्य आ मती नहीं है जगत में क्या जाने कि कुछ भी सोच विचार कर कोई मैं - ने १९२६ से लेकर आप सभों के पास अपने हालत का चिट्ठी लिखे छोड़ा आगे १९२८ को ८ आठवीं महिनो चल रहे हैं परन्तु कुछ का ठिकाना नहीं मिलती है — मैं ने आप सभा का कितना तो नुकसान पहुंचाया — जो को आप सब मेरे बात को अनसुनी होकर चुपचाप हो दिये — क्या जाने मेरे मा बाप आने हमारे पुरखे सब कोई रुपेया पैसा या धन दौलत खाये पीये थे होंगे - क्या जाने - इसी वास्ते मेरे बात को कुछ विचार नहीं होती है केवल सताना छोड़ कर और दूसरा बात ही नहीं है — महाशयो जगत में मनुष्य जाती सब ही कोई पापही से जन्मे हैं पर क्या करूं सारित में ही अकेला ठहरा क्या जाने - महाशयो यही जगत में अब मुझ को इतना सतावट मिलती है मेरा मरन को आगल हालत क्या होगी — सो महाशयो आप सभों से मैं निवेदन के साथ चिट्ठी लिख छोड़ता हूं आप का जब विचार करने लायक है तो विचार करिये और कुछ उपाय नहीं है तो प्रेम के साथ हुकुम दिजिये कि तुम पुरखाओं को रीति पर बढ़ जा तो मत: सन्त हो जायगे कितना कट कट लगे रहेंगे - एक जन को मर जाने से या निकाल कर देने से मण्डली न: तो ईश्वर नहीं रोयगा - आगे मैं कायल रहूं - { भूल चूकों को सुधारिये और माफ करिये

शुभ - लि: आनन्द रियेस - ठिकाना - जामखाल

इलाका चेयरमैन, राजगांगपुर, इस के सम्बन्ध में क्या बात है जांच करके कौंसिल को कृपया जनावें क्योंकि इस दरख्वास्त से तो विषय का कुछ भी हाल पता नहीं मालूम होता है —

[illegible signature]

23. 8. 28.

Church Council
Received 13.8.28
Register No. 187
Date 10.8.28
File 18
Reply No.
Date..........

Jambahal ता: १०/८/१९२८

- श्री श्रीयुक्त श्री युक्त महाशय पिटर हुरद सेक्रेटरी चर्च
- कौंसिल और सहायक मेंम्बर चर्च कौंसिलों को
- निबेदन सोहत योशु सहाय
- आगे- हाल: महाशय पिटर हुरद का लिखित
- चिट्ठी मुझ को आ मिली और चिट्ठी का सारा हाल
- मुझ को मालुम हुआ और मैंने महिनबारी को
- दो पंचैटों में से पहिल पंचैट में एक चिट्ठी पहिले
सुसमय में दिया और पिछे पंचैट में आ मिली
- आने के बाद मुझ से कई बात को पुछ पाछ
कोरा और आप सभों ने दिये हैं दोनों चिट्ठी
मांग लिये और बोले जो को पढ़ो मृत डिक्सर
साहेब भी आपने जीते समय में बोले रहे सामने में
- को आन्द्रीयस को अकेला रहना कठिन है: उसके
लिये कोई उपाय होवे × और जिस पंचैट में आप
- जो आए रहे उसके पहिले राजि द आगसत को भी
- बाबु पिटर हुरद आप का दिये हुए चिट्ठी घुमा २ पढ़े
और मुंह से बोले जो को हां पर करते नहीं
- और आप सब चिट्ठी में लिखते हैं कि आप आपने
चिट्ठी को आपने इलाका के जरिये कौंसिल में लिखो
- भेजिये — महाशय आप सभों से मेरा निबेदन है २
- कि काहिए मैं किसे तौर से आप सभों को इलाका के
- जरिये चिट्ठी जना सकुं — मैं राजगांगपुर में आप सभों
को पुछने का इरादा रहा - परन्तु पढ़ाय़ों को आस देखने से
समुय बित हो: गई: — शुभ लि: आन्द्रियस- मिंज- जाम ब्राहु
भुलों का माफ करिये

Office

Send it to the Rev. John Vengra, Ilaka Chairman for his opinion.

[signature]
15/8/28

Church Council
Received 26.9.28
Register No. 292
Date 24.9.28
File 13
Reply No.
Date

To

The Church Council.
Ranchi.

~~The Chmt Council of G. E. L. Church Ranchi~~

Manewar mahasay,

main ap logon ke nikat yah niwedan patr arpan karta hun, ki ap log kripaya mujhe Rupaye Paisa sambandhi baton men ~~mujhe~~ uchit bichar kar sahayta dijiye. kyonki jab se Bloke Grant band huo, mujhe bahut hi dukh sahne parta hai.

1. Rajgangpur Station men do karamchiri hain, Padri aur Prachark, aur itna amdani bhi nahota hai, ki dono ko pura talab milsake, har mahina 20, yah 25 Rupaye hota hai.

2. Sal men do yah tin bar mujhe Bamra mandli men saphar karna parta hai, har dapho ana jana men 10 Rupaye kharach hota hai. Railway, aur Motor se jana parta, hai. kyonki Rajgangpur se bahut hi dur hai. Is karan council se meri arji hai, ki ek to Rajgangpur ke liye mujhe sahayta mile, chahe Bamra saphar kharcha mujhe diya jaye. Nahin diya jane se to, Rajgangpur men rahne hare Padri ke liye, Bamra mandli sewakai men bahut hi roktok aur badh hoga. so kripaye uchit bichar kar mujhe hukum sunaiye.

Rajgangpur
26-9-28.

Ap ke agegadhin
Johan Bhengra

Church Council
Received...3.9.28.
Register No 226
Date 31.8.28
File 18
Reply No............
Date............

Rajgangpur
The 31st August 28

Manewar mahasay Secretary saheb
ap ko pariwar samet ham logon ka
yshusahaes.

Ai kal ham log sab koi achha
hain, ap logon ka kushal chahte hain
Likhne ka matlap yahi hai ki
C.C. ne jo Pracharakon ke liye Shiksa
course thahraya hai, wah ab tak ham
Rajgangpur Halka ko nahin mila hai.
Padri Shiksa course list bhi nahin
mila hai. aur Shiksa class kab se
Suru hai so bhi malum nahin hai.
aur kharach sambandh men kis riti
se bandobast hai ? In sab ke bishay
jahan tak jaldi ho sake khabar
diyjiye

Apka Sub[illegible]
J. Bhengra

Bare aschary ki bat ki Prehn saheb bolte hain wah sab kuchh bhej diya aur main ne bhi ek card likha par unko nahin milla hai. J. Topno

राजगांगपुर २१.८.२८

चर्च कौंसिल को मफ़त सेक्रेटरी और स्कूल सुपरवाइजर के

श्रीयुत श्रीयुक्त चर्च कौंसिल सेक्रेटरी को हम सर्वसाधारण भाइयों का जो पोलिटिकल स्टेट में रहते हैं बहुत २ योसुसहाय।

हम लोगों को माफ़ किया जाय उसरोज सभा में कितने २ बातों को सभा में जो बहस हुए न बूझने के वजह कुछ नहीं बोल सके, फिर कि सभा में स्कूल बारे क्या बहस हुआ सो भी हम लोगों को ठीक मालुम नहीं हुए। इसलिये हम थोड़े लोग जो थोड़ा बूझ समुझ रखनेवाले आप व सभी लोगों के चले जाने पर कुछ २ बिचार किया और यह अरजी पेश करते हैं यदि भूल हुऐ तो माफ़ किया जावे :—

१, हम लोग उड़िया भाषा सिखाया जाना बहुत ही मंजूर किया पर स्कूल स्टेट के पूरे अधीन को नमंजूर करते हैं-क्योंकि

(क) ऐसा होने से ख्रिष्टियान धर्म्म बिषय लोप होने को कमजोर होने मांगता है।

(ख) हिन्दी भाषा कमजोर होजाता है जो कि सारे हिन्दुस्तान का प्रसिद्ध + मूल भाषा है।

(ग) फिर हमारे स्टेट से कितने लड़के H.E. स्कूल जाने मांगेंगे उनका समय खोया जाता है अंग्रेजी भी लोप होजाने के वजह से।

२ हम लोग चर्च कौंसिल से अत्यन्त ही गोसा मानेंगे यदि स्कूलों को स्टेट के पूरे अधीन करदेगी तो :—

(क) मिस्सन काम का मतलब नहीं पुरता है-आज तो चर्च कौंसिल स्कूलों को संसारियों के हाथ जिमा करती है हम निराश में पड़ते हैं क्या जाने कल हमको किसी मिस्सन के हाथ में सौंपेगी।

(ख) आटोनोमस का मतलब नहीं सीखते हैं—

(ग) उड़िया लोग ख्रिष्टियानों के बराबर बिरोधी हैं, आज सैकड़ा

एक डिपुटी इन्सपेक्टर निकला जो स्कूलों के तर्फ़ बहुत करता है दूसरे २ अफ़सरों का ऐसा मतलब नहीं हैं वे कोई रकम से स्कूलों को पढ़ाने के ही चिन्ता में रहते हैं और अपने जाति पक्ष में रात दिन लौलीन हैं सो ख्रिष्टियान मझुर उड़िया के लिये सुरू ही से रहे। और और बातें हैं पर इतनी ही थोड़ी बातों को बियाने के लिये सौंपते हैं आइन्दे हुजूर मालिक हैं

भूल माफ़ किया जावे

आगे शुभ

आप लोगों के आश्रित दास

J. Bage

सभा की आज्ञा से।

Church Council
Received 8·9·28
Register No. 245
Date 21·8·28
File 18
Reply No.
Date

~~No. 251-253/28~~
F.-18

P. Hurad, Esquire.

Secretary G.E.L.Church,

Chota Nagpur & Assam, R A N C H I.

The Dewan of Gangpur State.

Sundargarh. Via - Jharsuguda.B.N.R.

3rd September 28

In continuation of my letter dated Camp Rajgangpur the 10th. August,1928, I have the honour to forward for your consideration and approval the views of the Church Council on the pointe raised in your letter No.3964,dated the 7th. August 1928, as follows:

1. RAJGANGPUR STATE SCHOOL.-The Church Council feels that it will not be possible to send smaller children of tender age to attend the infant classes of the State School as (i)the children attending it will be much inconvenienced by the distance which they will have to cover in going and coming. (ii) It will also inconvenience the parents in accompanying their children daily to the State School, for the children can not be left to themselves. and (iii) It may be noted also that in towns or larger villages where there are sufficient number of children or students there exist more than one aided-schools of the same standardand are not supposed to be duplications, in any sense. (IV) The elimination of the infant or lower classes from our existing school will destroy the identity and entirety of the School.

2. HINDI & RELIGION.- As to religious instructions and the teaching of Hindi the Church Council accepts your permission that these be done out of School hours.

3. URIYA TRAINED TEACHERS.-Your kind offer of Uriya trained teachers for our Rajgangpur School and village shools is thankfully accepted. The Church Council, however, suggests that wherever Uriya knowing Lutheran Christians are available they may be given the preference as this will encourage their entry to State services and help us in maintaining the religious character of our schools.

4. ALLOWANCE.-Your kind offer of an extra allowance to augment the present income of our teachers is accepted with gratitude.

5. DENOMINATIONAL RESTRICTIONS.-In the aided schools the Council will not put any restrictions of entry on the ground of caste and creed, as the same precedure is followed everywhere also in our schools in civil areas.

6. THE SYLLABUS.- The State Syllabus can be introduced for which the Council signifies its full approval.

7. STATE-QUESTIONAIRE.-The informations required in the Questionaire supplied to us by the State Deputy Inspector of Schools are furnished in a Statement which is enclosed herewith. In the Statement there are also embodied the salaries which the teachers do get from the Council and those paid by the villagers and also what is due to them according to the Scale under the Educational Code, B.& O.

With regard to Item 1. I would request that you will, in the circumstances explained therein, review your decision and let me know of it at an early date.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

[signature]

SECRETARY.

Memo No. 252/28. forwarded to Miss A. Diller

Memo No. 253/28. forwarded to Deputy Inspector of Gangpur State School

Raigangpur
27th Aug. 28.

Manewar mahasay Scane lang sahab ko mera yishu sahay.

Main ne Jambahal Andhrias King ka do ~~copea~~ kita darkhas, paye. us ka jabab main pichho se deunga, Kiunkei abhi to us ka jench nahin hua hai. Lekin us ke likhne ka mul yahi hai, ki Andhrias ka Stiri bahut din se Pagli holi hai, aur jab se Pagli hui tab hi se we donon alag alag hain. Abhi Andhrias ka bichar hai ki - Ilaka ka char council us ko hukum dewe, ki wah dusrá Stiri se sadi kare. lekin aisa hukum dena council aur Ilaka sabha ke liye muskil hai. Kiunki us ki Stiri hai aur abhi ma ~~Ba~~ Bap ke ghar men hai.

Ap se ek bat ki arji hai ki in Padriyon ka Maun Soon meeting hoga ki nahin? Agar hai to kab se hoga? aur us ke liye kaisa bandobast hai so kripa karke janaiyega.

Jadi Rupaya hai to Bamra State mision kam ke waste Rupaya bhejiye

Informed
Snehi
[illegible] 29/8/28

POST CARD
INDIA
WRITING SPACE
ADDRESS ONLY

Ham sab pariwar kushal se hain, Ap logon ka kushal chahte hain.

Respectful
Johan Bhengra
Raigangpur

Church Council
Received 29.8.28
Register No. 221
Date 27.8.28
File 18
Reply No.
Date

Mr. A. Atwad Esqr.
Lutheran Mission Comp.
Ranchi
B.N.R.

HALF ANNA

No. 231/28
F.- 18.

28 August 1928.

Miss A. Diller.
G.E.L. Church ,
Rajgangpur.

Dear Miss Diller,

Your two letters of July 26th. and August 23rd. addressed to the President, the Rev. J. Topono, were placed before the Executive, which desires that with a view to give to you some definite responsibilities in the administration of the Church's work, your duties at Rajgangpur may be defined. The Executive has decided that the following sphere of work may be allotted to you i.e.

(i) Medical Work.

(ii) Bible Woman's Work.

and (III) Colporteur's Work .

In accordance with the terms of the Agreement between the Home Board in Berlin and the Church Council, the missionaries' special work shall be assigned to them by the Church Council-, and that in accordance with the recommendation of the Home - Board. I am also writing to Berlin to this effect and hope they will approve of your appointment as a lady-missionary to this Church.

May God give his richest blessings on your work and make the same abundantly fruitful .

With kindest regards and sincere hearty Yishusahays from my wife and children and myself to your dear mother, your sister and last but not least to yourself,

I remain,

Yours sincerely ,

[signature]

Recd from the President
[initials] 24/8/28
5 P.m.

Church Council
Received 27.8.28
Register No. 214
Date 23+26.8.28
File 18
Reply No.
Date

Raj Gangpur, 26th July.

Dear Mister Topono!

May I inform you only for your knowing, that I am now in the service of the Gossner Mission. I hope that Mr. Stosch has informed the Church Council?

May God bless all His work and workers!

Yours in Him

A. Diller.

Received from President 5 Rs. [initials] 24/8/28.

Raj Gangpur 23rd Aug. 28.

My dear President J. Topono!

For your letter dated 15th Aug. many thanks. It must be a mistake that Berlin did not inform you.

You want to know which kind of work I have to do here. I got no specially order from Berlin which work I have to do. So I will say in short words following: After the death of my dear father, Mr. Diller, I took up his work so much as it lies in the the force and possibelity of a women. With other words I write the letters to the Dewan and helps the congregation where is need to help and where she asks for help. Every Thursday we have Bible lesson with our women and girls of Raj Gangpur that is, we learn together parts out the Bible which they get beforehand expleined. Every Fryday I have with our teachers prepare-lesson for the Children-Service. Sunday in the after-

noon I help in the Children - Service. And as you heard, in the last meeting about our Raj Gangp. School I got the order to supervise the Luth. Schools in Gangpur State.

If you want to hear more, I come, if it is God's will, end of September to Ranchi.

With many ʼjisu sahei

Yours in Him

A. Diller.

Raj Gangpur.

Church Council
Received 16:8:28
Register No. 194
Date 14:8:28
File 18
Reply No.
Date

राजगांगपुर पंचायत ।

९ अगस्त १९२८।

(स्कूलों के विषय पर)

माननीय चर्च कौंसिल के कार्यकारक सभा की आज्ञानुसार ... वैनर मि० सोय
के साथ (और मिस्स हैन्तगे के साथ) मैं ने ~~८~~वीं अगस्त को ... रांची छोड़ा और
चक्रधरपुर होते हुए रात १० बजे राजगांगपुर स्टेशन पहुंचा जहां भाइयों ने कार्म-
चारियों के साथ हमें स्वागत किया । हम डिक्लर मेमसाहिबा और मिस्स साहिबाओं के मिहमान रहे।
दूसरे दिन ९वीं ता: बृहस्पतिवार को ८ बजे हमों ने स्थानीय स्कूल का परि-
दर्शन किया । कुछ समय के पीछे गांगपुर स्टेट के डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स
भी हमों से आ मिले । स्कूल देखने पर हम सब, मिस्स डिक्लर (बड़ी) के साथ में
और सब पादियों और प्रचारकों और भाइयों और स्कूल के गुरुओं के साथ में गिर्जे
में स्कूल के स्टेट के साथ के सम्बन्ध पर बातचीत किई। बातचीत में दो मुख्य
बातें सामने रखी गई अर्थात :—

(क) कि उड़िया हमारे स्कूलों में मूल भाषा के रूप पर पढ़ाई जावे कि नहीं ?

(ख) कि स्कूलों के परिचालन का अधिकार किसके हाथ में रहे, स्टेट
के हाथ में कि मंडली के हाथ में ?

पहिले विषय पर कितने ही उपस्थित जनों ने भाषण किया कि यह बहुतही
आवश्यक है कि यदि गांगपुर अन्तर्गत के मुंडा उरांव हमारे खृष्टीयान लोग राजकाज
में प्रथम स्थान लेना चाहते हों, यदि सरकारी नौकरियों में और गांवों में भी अधिक
प्रभाव रखना चाहते हों तो उचित है कि वे देश और राज्य की भाषा को जानें और
इसी भाषा में लिखना पढ़ना भी करें । भाषा के अन्य लाभ भी बताये गये । अन्त में
सर्व सम्मति से यही स्थिर हुआ —

संकल्प: कि हमारे राजगांगपुर के स्कूलों में उड़िया ^शिक्षा की मूल, कहकर^ भाषा ~~होके~~ ~~मूल शिक्षा~~
~~को~~ ~~भाषा~~ पढ़ाई होवे ॥

इसके पीछे कहा गया कि डर है कि यदि हमारे स्कूल स्टेट के हाथ में आवें
तो हमारे दूसरे मास्टर और गुरुओं को काम छोड़ना पड़ेगा । इस पर प्रस्ताव हुआ
कि हमारे कार्मचारी लोग भी उड़िया सीखें और यदि प्रबन्ध हो सके तो एक अथवा
दो महीनों के लिये भी ट्रेनिंग पावें जिस्से ये qualified अर्थात उपयुक्त शिक्षक
कह कर स्वीकृत होवें । राजगांगपुर खास के विषय कहा गया कि यहां के मास्टर
लोग तो उड़िया पढ़ने लिखने को शुरु भी कर दिये हैं। इस बात पर विशेष जोर
दिई गई कि हमारे लूथरान स्कूलों में जहां तक हो सके लूथरान ही मास्टर होवें
इसलिये उड़िया पढ़ाई की आवश्यकता गुरु और मास्टरों के लिये उचित है।

उपरोक्त विषय के वादानुवादों के पीछे हिन्दी भाषा के व्यवहार के
हिन्दी
विषय में बातचीत हुई। क्योंकि यदि सब विषय उड़िया में पढ़ाये जावें तो हिन्दी छूट जायगी।
हमारी सब धर्म किताबें अधिकांश हिन्दी में है और यदि गांगपुर के लूथरान खृष्टीयान
छोटानागपुरवालों के साथ अपना घनिष्ठ सम्बन्ध रखना चाहें तो हिन्दी जानना ही चाहिये।
सो हिन्दी भाषा के साहित्य के तौर अध्यायन करने का विचार स्थिर हुआ।

उपरोक्त बातों के तय हो जाने पर गिर्जे घर में जहां पंचैत बैठा था वहां
स्टेट के डिप्टी इन्सपेक्टर बाबू मिश्र जी बुलाये गये । आप को सभा की ओर से
स्वागत किया गया — और आप के सामने ऊपर लिखे (क) + (ख) की बातें जनाई गईं।
आप ने प्रथम तो प्रत्युत्तर देने में खृष्टीयान धर्म की प्रशंसा किई और खृष्ट
को न केवल जगदगुरु पर ईश्वर का अवतार स्वीकार किया और यह भी
दर्शाया कि खृष्टीयानों के शुभ चाल चलन और आत्मशक्ति प्रशंसा के योग्य है।
आप ने कहा कि खृष्टीयानों की बहुत सी बातें है जो ^हिन्दुओं के लिये भी^ अनुकरणीय हैं। और यही
भाव ने आप को लूथरान खृष्टीयानों की सहायता के लिये उत्तेजित और उत्साहित
किया है।

इसके पीछे आप ने बहुत विस्तार से उड़िया भाषा की उपकारिता पर

Church Council
Received

और इसके देश की राज्यभाषा होने के कारण प्रजा की भलाई और लाभ का वर्णन किया। आप को बताया गया कि पंचैत ने यह संकल्प कर चुका है कि उड़िया भाषा ही medium of instruction होवे। तब आगे आप से पूछा गया कि स्कूलों के control अथवा चलाने के भार की दायित्व किसका होगा स्टेट का अथवा मंडली ही का जैसा अभी वर्तमान में है। जब यह प्रश्न उठा तब आपने स्टेट के दीवान H. D. Christian साहब की चिट्ठी चर्च के सेक्रेटरी को दिखलाई। चिट्ठी का नम्बर है २६६१४ ता: सुन्दरगढ़ ७ अगस्त १९२८ ई०। तिस पर आपने फिर भी चिट्ठी की अन्तिम बात पर ज़ोर दी अर्थात कि स्टेट के सिल्लेबुस अनुसार पढ़ाई होवे। हमों ने जवाब दिया कि इसमें कोई उजुर नहीं हो सकता है क्योंकि हम लोग सिविल राज्यों अथवा जिलों में भी बिहार और उड़ीसा के एडूकेशनल कोड के सिल्लेबुस अनुसार ही सरकारी-एडेड स्कूलों में पढ़ाते हैं। गांगपुर में भी वही सिल्लेबुस है फर्क इतनी ही है कि भाषा उड़िया है।

गांगपुर के दीवान की उपरोक्त चिट्ठी शामिल इस रिपोर्ट के नत्थी है। चर्च कौंसिल उसके विषयों पर उचित ध्यानदेकर उचित उत्तर देवे। गांगपुर स्टेट ने साफ कह दिया है कि हमारे स्कूल aided schools होंगे और धर्म की शिक्षा स्कूल घंटों से अलग समय में दिई जायें और स्टेट के सिल्लेबुस जारी होवें। पहिले तो हम सभों का ख्याल था कि स्टेट हमारे स्कूलों को लेकर अपने हाथ में रखेगा और सब प्रबन्ध आप करेगा पर उपरोक्त चिट्ठी से और डिप्टी इन्सपेक्टर के भाखा से हमारे मन का सन्देह और डर दूर हुआ।

जब आप से पूछा गया कि क्या हमारे स्कूलों के वर्तमान गुरु और मास्टर लोग उड़िया न जानने के कारण छूट जायेंगे तो आपने अति गाढ़ी सहानुभूति दिखाके कहा कि खास सुन्दरगढ़ में खृष्टीयान युवक लोग हाई स्कूल में पढ़ रहे हैं वे जब पास होंगे तो वे खृष्टान स्कूलों में लगा दिये जायेंगे, फिर कि मास्टर और गुरु लोग जो अब तक काम करते हैं वे भाषा सीखें और आवश्यकता हो तो वे भी ट्रेन किये जा सकेंगे।

गांगपुर के दीवान साहिब की उपरोक्त चिट्ठी के साथ साथ में डिप्टी इन्सपेक्टर ने एक लिस्ट दिखलाया जिसमें स्कूल सम्बन्धी कितने प्रश्न थे जो गांगपुर भीतर के रोमन मिशन के साहिबों के पास में भेजा गया था कि वे उन प्रश्नों को भर देने से मांगी हुई खबर स्टेट को देवें। डिप्टी इन्सपेक्टर साहब ने इस लिस्ट के भीतर की मांगी हुई खबरें हमों को भी देने कहीं। हम ने जवाब दिया कि इस देने में कोई मुशकिलता न होगी, हम पीछे रांची से इसे भेज देंगे।

डिप्टी इन्सपेक्टर साहिब ने हमें यह भी बताया कि हमारे स्कूल के आरम्भिक क्लासों में बड़े बड़े लड़के पढ़ते हैं जो एजेन्सी इन्सपेक्टर को अच्छा नहीं लगता है और जिससे वह हमारे स्कूलों से नराज हुआ। हम ने उसे बताया कि इसे रोकना कठिन है क्योंकि मुंडा उरांव लोगों में यही रीति है कि वे पहिले अपने लड़कों को हल जोतने भेजते हैं पर पीछे कुछ बढ़ जाने पर स्कूल भेजते हैं पर धीरे धीरे आस्ते यह रीति और प्रथा बन्द हो जायगी।

दीवान की चिट्ठी में खास राजगांगपुर के सम्बन्ध में एक बात लिखी है अर्थात दीवान ने लिखा है कि राजगांगपुर में स्टेट का एक प्रैमरी स्कूल है सो हमारे छोटे लड़के लड़कियां वहीं भेजे जावें क्योंकि स्टेट एक स्कूल के रहते दूसरा स्कूल नहीं दे सकता है। ~~हमों ने जवाब~~ डिप्टी इन्सपेक्टर ने भी इस विषय पर बताते हुए कहा कि एक ही जगह पर दो स्कूल होने से duplication होगा इत्यादि। हमों ने उसे समझाया कि एक ही गांव वा शहर में एक क्यों तीन चार स्कूल हो सकते हैं और तौभी duplication नहीं कहलाया जा सकता है यदि हरेक स्कूल में यथेष्ट संख्या विद्यार्थियों की होवे तो। आप ने हमारा कहना मान लिया और परामर्श दिया कि इस विषय पर हम समझाके Dewan को लिखें।

अन्त में सब बातों के तय हो जाने पर डिप्टी इन्सपेक्टर ने सेक्रेटरी से कहा कि आप को किसी प्रकार का जवाब मिलना चाहिये जो लेख में होवे जिससे आप उसे दीवान को दिखा सकें जिससे दीवान को विश्वास होय कि डिप्टी इन्सपेक्टर ने दीवान की आज्ञानुसार अपना काम किया। सो हमने एक चिट्ठी दीवान की चिट्ठी के जवाब में बनाई जिसमें २ मूल बातें दी हुई हैं अर्थात (१) कि हम इसमें सहमत हैं कि हमारे स्टेट एडेड स्कूलों में उड़िया शिक्षा की मूल भाषा की रीति पर पढ़ाई जायगी और कि हम स्टेट सिलेबुस लेने में कुछ उज्र नहीं देखते हैं क्योंकि हम तो civil areas में Govt. Syllabus का उपयोग किये हैं और यों Govt. Grant भी पाते हैं; और कि चिट्ठी की दूसरी बातों पर उचित ध्यान दिया जायगा और सुसमय में जवाब भेजा जायगा इत्यादि। हमारी उक्त चिट्ठी की नकल भी इस रिपोर्ट के साथ में शामिल है।

अब तो कौंसिल से हमारी सिफारिश है कि हम स्टेट-एड को ग्रहण करें; उड़िया शिक्षा की मूल भाषा कह कर हमारे स्कूलों में ग्रहण होवे और दीवान की चिट्ठी का उचित जवाब दिया जाए और जो Questionaire हमें मिला है उस पर का information स्टेट को दिये जावें। हम लोगों को आशा है कि जब स्टेट हमारे सब स्कूलों को ऐड दे सकेगा तो निश्चय लूथरान प्रजाओं की अत्यन्त भलाई होगी और स्टेट में हमारे लोग ऊंचे पदों और कामों में अच्छे और योग्य कर्मचारी होंगे ——

Ranchi
The 14th Aug: 1928 } Deputation { P. Hurad.
N. Ivy

राजगांगपुर पञ्चैत ।

९ अगस्त १९२८

[मंडली के विषयों पर]

संध्या ५ बजे आज के दिन में पादरियों और अन्य कर्मचारियों और साधारण भाइयों के साथ में मंडली के विषयों पर बातविचार करने को सभा बैठी।

१। चर्च सेक्रेटरी आज के इस बड़ी की सभा के सभापति हुए।

विनती प्रार्थना करने और धर्मशास्त्र के पढ़ने पर सभा के काम का आरम्भ हुआ। आरम्भ में सेक्रेटरी साहब ने कौंसिल की आर्थिक स्थिति के विषय में और कि किस प्रकार से भविष्यत में मंडलियों को सहायता किई जा सकेगी इस पर भाषण किया (२) फिर आप ने आत्मपोषण के सम्बन्ध में कहते हुए "स्वपालन रिज़र्भ फंड" के विषय में पूछ पाछ किया और उसकी बड़ी आवश्यकता पर जोर देकर उसके सम्बन्ध में खूब परिश्रम करने का अनुरोध किया—

(२) बामड़ा स्टेट के ४ जन प्रचारकों की लौकिक दशा पर, वहां के भाइयों की लौकिक दशा पर और आत्मिक दशा पर जो बातचीत हुई। सुनाया गया कि बामड़ा में प्रचारकों का कुछ भी जगह ज़मीन नहीं है और कि वे यदि कौंसिल से पूरी सहायता न पावें तो आगे को वहां मिशनरी काम करना बिलकुल ही असाध्य बात है। इलाका ने बताया कि इलाका ने बीते समयों में कई एक बार अपने निज खज़ाने से कर्मचारियों के बतनों को काटकर बामड़ावालों को खर्च दिया पर आगे यह इलाके के सामर्थ्य से बाहर है क्योंकि कर्मचारियों को तलब पूरा मिलना सका नहीं जाता है। साधारण भाईयों की दशा वहां बहुत ही खराब है क्योंकि बेठबेगारी इत्यादि से उनको अपनी खेती बारी करना कठिन हो जाता है। कभी भी उनको फुरसत नहीं होती है कि घर का काम काज करे सो ऐसी गरीबता से वे कर्मचारियों के लिये कुछ भी नहीं सहाय कर सकते हैं।

२। फिर मंडलियों में आमदनी और खर्च सेन्ट्रलैज होते हैं इस पर पूछपाछ हुआ।

(क) राजगांगपुर के पादरियों ने बताया कि अभी ~~बीते बरसों से~~ जब से डिलर साहिब मर गये तब से रुपैये पैसे न इलाका में, न पेरिश में सेन्ट्रलैज होते हैं परन्तु हरेक प्रचारक अपने प्रचारकपन की आमदनी आप ही लेता और खा जाता है केवल हिसाब दिया जाता है।

(ख) कारीमाटी इलाके ने भी बताया कि बीते २ बरसों से लेकरके वहां भी प्रचारकपन की आमदनी प्रचारकपन ही में खर्च जाती है। फिर कि जब से ग्रैन्ट बन्द हुआ है तब से तो वे सेन्ट्रलैज करने की आवश्यकता नहीं देखते हैं क्योंकि उनको तलब नहीं पुरता है और पंच भाई लोग कहते हैं कि हमारे प्रचारक की आमदनी को दूसरे प्रचारक खा जाते हैं फिर कि जब चर्च कौंसिल तलब नहीं पुरा सकती है तो क्या दरकार है कि सेन्ट्रलैज होवे

(ग) जड़ाकुदार इलाके ने सेन्ट्रलैज हुआ है और उससे उनको क्या लाभ हुआ है सो बताया। मरकुस पादरी बाबू ने सेन्ट्रलैज का अच्छा उदाहरण भी दिखाया।

जब हमों ने कारीमट्टी इलाके की बुरी दशा का रिपोर्ट सुना तो बड़ा दुःख बूझ पड़ा क्योंकि इलाके चर्च कौंसिल की और महासभा की आज्ञा के विरुद्ध करते हैं। चर्च सेक्रेटरी ने उन सब इलाकों को बताया कि बड़े अफसोस की बात है कि अब प्रचारक और पादरी लोग भी अपने अपने ~~इलाकों के~~ सीवानों को अपनी पुरखौती जमीन्दारी समझके उसमें की सब आमदनी को खा जाने का उपाय किया है और वे अपने को किसी के आगे जवाबदिही नहीं समझते हैं यह रीति बहुत ही बुरी और अन्याय है। महासभा ने भिन्न २ प्रकार के सभा और पंचैतों का संगठन किया है और आज्ञा दिई है कि केवल इलाका-पंच खर्च वर्च कर सकता है परन्तु अफसोस की बात है कि इसके विरुद्ध काम किया जाता है।

इस प्रकार कहने से पादरी प्रभुसहाय होरो ने मान लिया कि बहाना करना अच्छा नहीं है क्योंकि पादरी प्रचारक लोग आप ही सेन्ट्रलैज के लिये काम नहीं करते हैं

और उसको नहीं चाहते हैं परन्तु उसको रोकते हैं।

ऐसे स्वीकार करने पर सेक्रेटरी ने बताया कि आजकल दुनिया में कोई भी किसी को सर्वसाधारण के परोपकारी कामों के लिये पैसा नहीं देता है। सब कोई सभा अथवा समाजों को देने चाहते हैं। सरकार भी स्कूल-ग्रैन्ट कौंसिल को देती है वैसे ही अमेरिका भी बोर्ड को और अब कौंसिल को देता है। पर कौंसिल किसको देगा ~~और~~ क्या इलाकाओं को जिनके काम करने का अथवा खर्च वर्च चलाने का ठिकाना न हो? निश्चय ऐसे हालत में कौंसिल इलाके को नहीं दे सकता है जब लों कौंसिल के नियम पालन न होवें। फिर कौंसिल ऐसी बातों के लिये महासभा के आगे जवाबदेही है यदि इलाकों की आमदनी और खर्च अनुचित रीति से होते हैं। कौंसिल इलाकों को अथवा इलाका चेयरमैनों को और पादरियों को भी जवाबदेही ठहरावेगा। सो जो कुछ हुआ है सो निर्बुद्धि की रीति पर बिन जवाबदेहीवालों के समान किया गया है।

सेक्रेटरी ने आगे बताया कि ऐसा नहीं विचार करना चाहिये कि कौंसिल के ग्रैन्ट के लेने ही के लिये सेन्ट्रलेज़ा आवश्यक है। निश्चय कौंसिल सके तो घटी को पूरी करने के ~~लिये~~ लिये ग्रैन्ट देगी परन्तु बाहर की आमदनी से न हो सके तो कौंसिल विचार करेगी कि स्थानीय आमदनी और देनों को बढ़ाने के लिये क्या उपाय कर सकेगी = इत्यादि

इसके पीछे मि० निर्मल राय ने उपस्थित सभा को बताया कि यदि हरेक घर से चाट सिरी ठीक से दिई जावे तो घर पीछे महीना में 8 सेर चावल आमदनी होगी और इस हिसाब से उसने राजगांगपुर और कारीमाटी इलाके को दिखाया कि रुपैये में 8 के भाव से यदि चावल बेचा जाए तो सिर्फ चाट सिरी ही की आमदनी से कर्मचारियों का तलब निकल जायगा — फिर उन्होंने रांची का उदाहरण उनका बताया और दिखाया।

अफसोस की बात है कि इलाके में प्रचारक और पादरी लोग ठीक प्रकार से काम नहीं कर रहे हैं और उनके काम का देखभाल नहीं होता है जहां पंच लोग भी ढीले हैं और जहां पंच और कर्मचारी ढीले हैं वहां की मंडलियों की दशा ठीक नहीं है और मंडली की आमदनी बढ़ने के बदले में घटती जायगी। सर्व कौंसिल को इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये और मैं समझता हूं कि कौंसिल के पदधारियों को शीघ्र ही सब स्टेशनों में जाके इस विषय पर और साथ साथ मंडलियों की आत्मिक दशा पर भी आत्मिक जीवन बढ़ाने की चिन्ता ~~करे~~ करना चाहिये। कारीमाटी इलाके ने मुझे कहा कि आप शीघ्र कारीमाटी इलाके में आवें और पंचों को समझावें पर मैं कहता हूं कि सब पदधारी इस पर विशेष चिन्ता करें।

Ranchi }
14th Aug: 1928. }

[illegible]
Church Secretary.

Lutheran Schools in Gangpur State.

Name of Ilaka.	Name of School.	Name of teacher.	Pay.	Remarks.
1. Rajgangpur	1 Rajgangpur	Amus Bara	20	
		Christodham Bage	15	
		G. C. Behera	18	
		Prabhudan Bage	10	
		Miss Salomi Kerketa	6	
	2. Bartoli L.P.	Christodham Bage	.8	
		Niral Horo	7	
	3. Dahijira L.P.	Samuel Guria	8	
		Abraham Kandulna	7	
	4. Bunga L.P.	Abraham Kerketa	8	
2. Karimati	5. Karimati	D.M. Guria	19	
		M. Prakas Tirki	15	
		P.S. Amus Aind	10	
		Samuel Kerketa	8	
		Samuel Kandulna	8	
		St. Sudan Naik	5	
		Shiloh Tirky	8	
	6. Saruda	Nickodim Hemrom	3/8,	other half pd by villagers
	7. Loaram	Suleman Jojowar	3	do
		Daud Surin	2	"
	8. Kulabera	Patras Jojowar	2	"
	9. Harungbera	Junas Kandulna	1/8	"
	10. Kulagojo	Yishukiung Horo	4	"
	11. Gurgura	Johan Topno	2	"
	12. Purnapani	Junas Topno	2	"
		Mukta Lugun	2	"
	13. Banakata	Junathan Kandulna	1/8	"
		Dasaing Kandulna	2/8	"
	14. Kardega	Daud Surin	2	"
	15. Janumbera	Suleman Bage	1	"
	16. Teliapus	Prabhujiwan Kerketa	2	"
3. Jarakudar	17. Jarakudar U.P.	Eliazar Toppo	22	
		Biranjhario Topo	10	
		Hisankar Panday	8	
		Masihdas Surin	6	
	18. R. Birkera	Nathaniel Aind	2/8	, other half is pd by villagers
	19. Purnapani	Nehemia Hemrom	6	"
	20. B. Birkera	Abraham Kongari	4	"
		Dutami Dhan	1/8	"
	21 Takra	Yakub Sanga	3	"
	22. Balandabera	Samuel Surin	3	"

Total Rs 277 plus Rs 69 pd by villagers in cash & ~~ki~~ kind.

The Council of the Gossner Ev. Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845. — Autonomous 1919.]

OFFICERS & MEMBERS OF THE COUNCIL.

1. * *President*— Rev. J. Topono, Ranchi.
2. * *Secretary*— P. Hurad, Ranchi.
3. * *Finl. Secy & Treasr*— Rev. M. Prehn, Ranchi.
4. * Rev. J. Lakra, M. A., B. D., S. T. M. Principal, High School, Ranchi.
5. * Rev. B. Minz, L. Th., High School, Ranchi.
6. Miss F. Heintze, Ranchi.
7. A. L. Tirkey, High School, Ranchi,
8. Obed Minz, B. A.
9. H. D. Horo, Sulungi, P. O. Karra, Ranchi.
10. D. M. Panna, Dy. Magte: Hazaribagh.
11. Rev. Isaac Ecka.
12. Rev. A. John, P. O. Kinkel, Ranchi.
13. Rev. Marcus Topono, Jarakudar, Panposh, B. N. Ry.

Those marked * constitute the Executive.

LUTHERAN COMPOUND.
~~RANCHI, (Behar.)~~ Camp Rajgangpur

No. 205/28
F. 18

Dated the 10th August 1928.

From

P.Hurad,Esquire
Secretary G.E.L.Church,Ranchi.

To

H.D.Christian.Esquire
Dewan,Gangpur State,Sundargarh.

Sir,

I have the Honor to acknowlege receipt of your letter No. 3964 dated,Sundargarh,the 7 th.August 1928,on the subject of our Church Schools within the State.

2.The Deputy Inspector of Schools so kindly deputed by you also presented your views and the general policy followed in the State aided Schools,and placed before us the questionaire circulated to the Fathers of the R.C.Mission operating in your State.

3.I beg further to State that we dont see there should be any difficulties by way of introducing Oriya as a medium of instruction in all our schools,and we are also prepared to have your Syllabus followed everywhere, as we do the same in the civil areas and obtain Goverment grants.

4.The other particulars referred to in your letter under reference will be duly attended to after my submitting the detailed Report of this meeting to the Church Counsil.

5.The other informations required in the questionaire will also be furnished to your office from Ranchi in due course of time.

I have the honor to be
Sir,
Your most obedient servant

P. Hurad

Secretary G.E.L.C.

Please address reply by designation and not by name:
SUNDARGARH,
VIA JHARSUGUDA, B. N. R.

Camp Rajgangpur 9/8/28

No 3964

Church Council
Received 13.8.28
Register No. 192
Date 7.8.28
File 18
Reply No. 205
Date 13.8.28

FROM

H. D. Christian, Esquire.,

Dewan of Gangpur State.

To

P. Hurad, Esquire., Secretary G. E. L. Church,

C/o Miss Diller, Rajgangpur.

Dated Sundargarh, the 7th August 1928.

Sir,

In reply to your letter No. 195/28 dated the 4th instant, I have instructed our Deputy Inspector of Schools to attend the meeting on the 9th instant at Rajgangpur; he will place my views before you.

They ~~You~~ are briefly as follows:

(1) The State has opened a school for primary education at Rajgangpur which we are prepared to extend; all boys should attend it. Should you desire to give Christian boys religious instruction and a knowledge of reading and writing Hindi it must be out of school hours.

Your middle vernacular school at Rajgangpur may continue and we shall provide one trained Uriya teacher and certain material help as we are doing at present. Later the Uriya staff can be augmented as becomes necessary.

(2) Your primary schools have generally one teacher; we are prepared to select certain of these schools and provide them with one additional Uriya trained teacher as well as certain material help; we are also prepared to give an extra allowance to augment the present income of your teacher.

(3) In all schools aided by us there will be no restriction

of entry on the ground of caste or creed; religious instruction will be given out of school hours. Our syllabus of studies will be followed.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

[signature]

Dewan of Gangpur State.

Banerjee.

Copy of the letter No.3963 dated the 7th August 1938, from the Dewan of Gangpur State, Sundargarh, to the Revd.Fr.H.Floor, S.J. Gaibira.

....

Will you kindly furnish me with the following information:

I. Names of villages, where you have schools and wether L.P. or U.P.
2. Present roll number of boys in the schools.
3. Number of teachers in each school.
4. The cash renumeration paid to the taecher and wether he receives anything from the boys and if so approximately how much.
5. What cash aid you would propose our giving to each of your present teachers in addition to what he receives already from you. The amount of aid will of course very according to the senicrity and qualifications of the teacher.

I am sending copies of this letter to the Fathers in charges at Kesramal, Jhurmur and Hamirpur asking them to give the information in respect of their charges in order to save you trouble and avoid lose of time.

....

Office of the Dewan of the Gangpur State, Sundargarh.

True copy
A. Diller
9. Aug. 1938.

Rajgangpur, 22.-2.-28

To the Church Counsel
of the Lutheran Church
Ranchi.

I beg to say that since January of this year we started at Rajgângpur a Oriya School.

Never I felt the necessity of such a School more as at the present time..The Court language is Oriya and our Bretheren are ignorant of this language and all their papers have to be translated and they must believe what they hear.Than a other thing: There is nealy no christian Gautia of Ganju in Gangpur. All this posts are given to the Oriya speaking people on account of their ignorance of that language. Than all the posts of jungle Murrirs or Police are closed for our Boys because they do not know Oriya.

According the last Census we have 17704 Christians in Gangpur and it is high time that they should come out from their corner to help the State and get the posts which have now the Cuttack heathens

I had a talk with the Dewan of Gangpur and he is quite willing to help us in this matter. He is now going on to make a wel in front of the School which is badly wanted. Than the Schoolbuildings are repaired by the State and they granted also one Oriya teacher more. Today I wrote to the Dewan , asking him for a suitable Grant and also for Chairs and tables and Maps, and I hope he will grant it too.

The Character of a Mission Scool must remain and I am glad, the present Dy. Inspector of School's quite agreed with me in this matter.

On account of this we will have at Gangpur a pure Oriya School and I shall take the Boys from Karimatti as well from Jarakudar, who passed the U.P. Presently I have 60 Boys and Girls at this School and I hope to bring it to 90-100 pupils.

The idea of such a School is very sympatic to our bretheren they are very glad to get helped in this way and I hope the C,C. will agree with and will be glad that our bretheren are helped in this way.

C. C.

W. Diller, Missionary
Rajgangpur.

195/28
F.- 18.

P. Hurad, Esq.

Secretary, G.E.L.Church,

Chota Nagpur & Assam, R a n c h i.

The Dewan , Gangpur State,

SUNDERGARH.

4th. August 28.

For sometime past, since the death of the late Rev. W. Diller, the Council of the Lutheran Church has been considering the question of introducing Oriya as a medium of instruction in our mission schools within your State. The Council feels that some definite understanding ~~on~~ along this line be reached with the State School authorities. I should be glad and thankful if an official of the Department could be deputed to discuss matters at Rajgangpur on the 9th. instant, for such negotiations as will be needed in a spirit of mutual co-operation.

I would, however, like to come over to Sundergarh, if there be such a necessity, but a State deputation if sent to Rajgangpur will be much helpful and save us a lot of trouble.

I have the honor to be,

Sir,

Your most obedient servant ,

[signature] 4/8

SECRETARY.

194/28.
F.-18.

4th. August 28.

Rev. Jonan Vengra.

Rajgangpur.

Piyare Babu Jonan Vengra ko sapariwar aur mandali ke bhai aur bahinon sahit bahut Yishusanay !

Bisnes likhne ki bat yah hai ki main aur Nirmal Soy babu-do jan 8 tarikh rat ke Passenger train se Rajgangpur pahunchenge,jisten wahan ap logon ke Ilaka sabha men pahunch saken aur ap logon ke sath men mandali sambandhi bishayon par batchit bhi karen. Bishes karke Gangpur State ke bhitar ke hamare schoolon men Oriya parhane ke sambandh men ap logon se batchit karne ko jate hain. Main aj Diwan ko bhi likh raha hun ki kisi school department ke jan ko bheje jo ham logon ke sath men iske sambandh men batchit kar sake.

Dera ke liye kuchh achchha jagah bandobast howe. Kyajane bangalow-men jagah hogi ki nahin,ham nahin jante hain. Parantu aisa howe ki ahm logon ko asubishta na howe . Itna hi likhta hun.

Yishusahay !!!

SECRETARY.

आम ब्राल ता: ६/५/२८

श्री श्री ६ श्री युक्त महामते वर महाशय [illegible]
वास्ते सेक्रेटरी चर्च कौंसिल और सहायक मेम्बर सेक्रेटरी
चर्च कौंसिलों को मेरा योशु सहाय होवे

— आगे मेरा चिट्ठी लिखना को मैं जो इतना बार
चिट्ठी लिखे छोड़ा यही बात बार में सो चिट्ठी
आप सभों को मिलता है की नहीं चिट्ठी सो मुझ को न:
मालूम है पर मैं कई एक बार चिट्ठी लिखे छोड़ा पर काम
कुछ नहीं हुइ कारण क्या है मैं नहीं जनता हूं

— अगर यदि इस बात के बारे में कुछ बिचार नहीं
है तो आप सभों के ओर से यही रूल ठहराया जावे
और बोला जाए को तुम अपढ़ आदमी को बात बोलना
हक नहीं है और तुम्हारा बात नहीं चलेगा सो भला है
कि तुम अपने पुरखाओं के रस्ता पर चला कर
यही हुकुम मिले पर ऐसा सताना ना होय
काहे कि अभी प्रायः छः महिनो बित रहे हैं पर
आप सब मुझ को कुत्ते के बराबर भी नहीं देखते हैं
कैसा ही करने से मैं क्या करूं मेरा कोई सहायक नहीं
निकले मर जाने से भी मेरा पिछा करने वाले कोई नहीं
निकलेंगे — भूल चूक सुधार लेना

— आगे शुभ लि: अन्द्रियस मिंज - आम ब्राल

Church Council
Received 9.6.28
Register No. 39
Date 7.5.28
File
Reply No.
Date

Pd. 12/5/28

Rajgangpur.
9th Mar 28

Secretary Babu koyishwalai

Bite 13th January 28 ki baith
ki men Councilne thahraya
ki wa Candidate jo colporteur
kam se chutti haye, C.C
sahayta ke liye ek mahina
ke talab ke barabar degi.
Maine abtak sahayta
dam C.C se nahin paya
hai arji hai susamay men
bhejo jay; Bari kuri halat
men hum ap jan sakte hain
4.5 mahina bina kam rahne
se kitna muskil hai so
kripakarke Khajanchi
saheb se bat karke paisa

INDIA POST CARD

REPLY.

WRITING SPACE | ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE HALF ANNA ½A

RANCHI DELY 11 MAY 28 15 A.M.

RAJGIR 10 MAY 28

To,
The Secretary,
Lutheran Church
Ranchi
B. N. Ry

bahut jald bhej kar meri
buridasha ko dur kariye
jis ke liye main apka bora
dhanyabadi hunga. Maine
hane ka asha dekha par
nahin bheja gaya.
Apoint ment letter paya
hai. Appka sewak
Cand: Daud Soreng

Rajgangpur.
12.5.28

Mahashay,

Ap ko yishusahay.

Maine ap ki hukumnama chithi pai. koi roktok ke karan des se chithi pai to liye tank anusar jane nahin saka. main wahan (Kinkel) jane ke liye bahut sighr taiyar hota hun

Yadi hane to John Saheb ke sath Rajpur men batchit karunga. Paisa bhi paya.

ap ka Sewak

Cand. Daud Soreng

INDIA

POST CARD

REPLY

INDIA POSTAGE

HALF ½ A. ANNA

WRITING SPACE

ADDRESS ONLY

RANCHI DELY. 14 JUN. 28

AJMER 12 JUN. 28

Church Council

Received 14.6.28

Register No. 82

Date 12.6.28

File ....

Reply No. ....

Date ....

To.

The Secretary

Lutheran Church

Ranchi

B.N.R.

21/5/28

Church Council
Received 9.6.28
Register No. 44
Date
File
Reply No.
Date

गो. डि. लु. चार्च कौंसिल -

को अर्जी पत्र।

महामान्यवर महाशय - C.C. को राजगांगपुर इलाका, पादरी पन - राजगांगपुर, स्टेट बमड़ा के प्रचारकों का योग्य सहाय पहुंचे।

आपको कदाचित - कई बरसों से मालूम होगा कि हम बमड़ा के प्रचारकों को जीविका सम्बन्धी दशा अति कठिन है। हम लोगों के अर्जी करने पर हमारे पादरियों ने कई दफा हमारी अर्जी करने पर कई एक अर्जी पेश किई, कई दफा आपने कृपा से हमारी उपकार किई। अब से ग्रेन्ट बन्द हुआ। हम लोग बड़ी मुसकीलता में हैं जब तक मन्यावर मृत डिल्गर साहब ने किसी प्रकार से हम लोगों का सहाय किये और कोई प्रकार से हम लोग अपना काम किये अभी उसके अन्तकाल होने से अभी तक हम लोगों का तलब तनखा अथवा ग्रेन्ट का कोई ठिकाना नहीं है उधारा पैंचा रीन करन करके इतना दिन कोई सूरत से दिन बित गया। आगे को किसी प्रकार का कोई तरफ से कुछ भी तलब या ग्रेन्ट न मिलने से हम लोग लचार बस हो अपने मण्डलियों का काम नहीं चला सकते हैं। हम लोगों के नेम मण्डली की ओर से न इलाका की ओर से कुछ सहाय पाने का कुछ उम्मेद नहीं है। नीचे लिखित बातों को दृष्टि से आप को पूरा मालूम हो जायगा कि आगे भी हम लोगों की दशा यों ही रहेगी और उस भी अधिक कठिनता की सम्भावना है।

१- हमारे इलाका खाओं में कुछ आमदनी नहीं है। हमारे इलाका के (राजगांगपुर स्टेट के कर्मचारी हैं) किसी को पूरा तलब मण्डली की ओर से नहीं मिलता है हां बहुत तेरों को आधा तलब भी नहीं मिलता है इस हेतु वे भी हमारा सहायता नहीं कर सकते हैं।

२ - बमड़ा में हम लोगों का धरोलावला अच्छा नहीं है। हम लोगों का कुछ जमीन, टांड नहीं है जिसके द्वारा से हम को कुछ सहायता मिल सकती है।

३, हम लोगों की मण्डलियां भी अति गरीब है हम लोगों की जिम्मेदार सिर्फ बहुत कम, आमदनी है। किसी प्रचारक पर भी १) था) २) रुपैया से ज्यादा नहीं है। क्योंकि हमारे भाई लोग अति गरीब हैं उनका अपना ही जीविका चलाना बड़ा कठिन है थोड़ा खेतबारी है उस भी समय पर वास बास खेती बारी न करने सकने के कारण उचित फसल नहीं पाते हैं भी विका को लेये काम करने को इधर उधर कितने महिनों तक चले जाते हैं। आगर कोई यहां आकर भाइयों को देखता तो पाता कि किसी का योग्य घर नहीं है केवल छोटा झोपड़ा है किसी का तो बैल बकरी भी नहीं है किसी का तो खेत भी नहीं है।

ऐसी हालत के कारण उचित दान नहीं दे सकते हैं इसको छोड़ बमड़ा स्टेट के कर्मचारी और भाइयों को दूसरा कई वहाँ को देश को कई बातों के कारण बहुत नुकसान है / इसके सिवाय बमड़ा देश के कर्मचारी को भराड़ लियां गया है / काम बहुत है बाहर पड़े हैं |

इस लिये हम आयोग्या को लाचार सेवक आपसे अति दीनहीन और आदर पूर्वक विनती करते हैं । कृपा कर के हम लोगों के जीविका के लिये तलाब वह ग्रेन्ट का सु प्रबन्ध कर दीजिये । जिससे महीना रहम लोगों को मिले इसके बिना स्टेट में रहकर काम चला नहीं सकते हैं ॥

आइन्दे हजुर आप मा बाप हैं |

१ जगनिदास कोरेरा प्रचारक-मतन, आना
2 प्रभुसहाय-डांगा, ईलापरा - .. बमड़ा ,,
3 धर्म प्रकाश हेरेंज देवगढ़ - .. ,,
४ सबित- कन्हुलता- जिलिंगीबहाल- प्रचारक
५ गुनस हीरो नवापल्ली प्रचारक /

Ham log sipharish karte hain ki unki dasha yah hi jaisa ki unhon ne bayana kiya hai. Ham log ati/ thus L.C.E. ke Thangadari hain agar unki suni jaye.

Padri - L. Horo

"Johan Bhengra Padri"

Johan Topno